**LOPE DE VEGA  
*El Hamete de Toledo***

Personajes:

|  |  |
| --- | --- |
| *DON JUAN DE CASTELVÍ* |  |
| *BELTRÁN, lacayo* |  |
| *DOÑA JUANA* |  |
| *DON LUIS* |  |
| *DON FRANCISCO* |  |
| *LEONELO* |  |
| *FINARDO* |  |
| *HAMETE* |  |
| *RUSTÁN* |  |
| *SALECO* |  |
| *DALIMA* |  |
| *BRAZAIDA* |  |
| *ARGELINA* |  |
| *ZARO* |  |
| *ZAIDE* |  |
| *DON CRISTÓBAL* |  |
| *UN CANARIO* |  |
| *LICENCIADO HERRERA* |  |
| *LAURENCIO* |  |
| *DON MARTÍN* |  |
| *PÁEZ, mozo de mulas* |  |
| *SALICIO, alcalde villano* |  |
| *SOLANO, alcalde villano* |  |
| *GASPAR SUÁREZ* |  |
| *DOÑA LEONOR* |  |
| *RIBERA* |  |
| *FRANCISCA, criada* |  |
| *ANA, criada* |  |
| *CORCUERA, lacayo* |  |
| *HERMANO DE GASPAR SUÁREZ* |  |
| *UN PAJECILLO* |  |
| *CAPITÁN GUEVARA* |  |
| *JUAN GUTIÉRREZ TELLO, corregidor* |  |
| *UN NADADOR* |  |
| *MOLINERO* |  |
| *GIL, villano* |  |
| *BARTOLO, villano* |  |
| *MESONERA, villana* |  |
| *LUCÍA* |  |
| *PASCUAL, labrador* |  |
| *LORENZO, labrador* |  |
| *UN CORREO* |  |
| *MAESTRO DE ESGRIMA* |  |
| *ALCALDE* |  |
| *SECRETARIO* |  |
| *ALCALDE MAYOR* |  |
| *ALCALDE DEL LUGAR* |  |
| *ALCALDE DE TOLEDO* |  |
| *INÉS* |  |
| *BENITA* |  |
| *JUANA* |  |
| *MÚSICOS* |  |
| *MOROS* |  |
| *MORAS* |  |
| *COMENDADORES* |  |
| *CUATRO CABALLEROS* |  |
| *CRIADOS* |  |
| *GENTE* |  |
| *ALGUACILES* |  |
| *LABRADORES* |  |
| *TRES VILLANOS* |  |
| *DOS FRAILES* |  |

|  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| **Acto I** | | | | | | |
|  | | | | | | |
| *Salen DON JUAN CASTELVÍ, del hábito de San Juan, de noche, y BELTRÁN, su lacayo, con broqueles; y los músicos* | | | | | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Aquí canten por mi vida. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Nunca en noche de San Juan |  | | buenas músicas se dan. |  | | | | | | | | |
|  | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Estoy, Beltrán, de partida. |  | | Es de San Juan esta cruz, | 5 | | patrón de mi religión; |  | | de Juana los ojos son |  | | que dan esta noche luz; |  | | y ella es también de San Juan. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | A ser aquestos galanes | 10 | | que han de cantar también juanes, |  | | y llamarse Juan Beltrán, |  | | y tener todos juanetes, |  | | era linda juanería. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Dulce doña Juana mía | 15 | | que por tus ojos prometes |  | | ser leal en esta ausencia, |  | | mira que tus ojos juras |  | | y advierte, si te perjuras, |  | | que ha sido poca prudencia | 20 | | aventurarte a dos cielos: |  | | dos cielos tus ojos son. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Dulce Beatriz que, en prisión |  | | de mi amor y de tus celos, |  | | tienes al pobre Beltrán, | 25 | | pues juras ser firme ausente, |  | | mira que, quien jura y miente |  | | en la noche de San Juan, |  | | las brujas que los helechos |  | | pacen las chupan después | 30 | | por todo el año; no des |  | | a tales bocas tus pechos. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Canten, señores, que ya |  | | está la calle sin gente. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  | | --- | | ¿Hay buena letra? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MÚSICO 1º | |  |  | | --- | --- | | Excelente. | 35 | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  | | --- | | ¿De qué trata? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MÚSICO 2º | |  |  | | --- | --- | | Él lo verá. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Dígolo porque me holgara |  | | que algo de Beatriz dijera. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MÚSICO 1º | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué buena discreción fuera |  | | que a doña Juana igualara! | 40 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ¿No voy con mi amo yo, |  | | y aun delante, que es más? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MÚSICO 2º | |  |  | | --- | --- | | Sí. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Pues, ¿por qué no ha de ir ahí |  | | Beatriz? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MÚSICO 1º | |  |  | | --- | --- | | ¿Cantando? Eso no. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Si no me hiciere poeta, | 45 | | digan que estoy sin juicio. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MÚSICO 2º | |  |  | | --- | --- | | Eso postrero es indicio. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Es enfermedad discreta. |  | | Mas tengo lo más andado, |  | | y este buen oficio tomo | 50 | | para ser poeta. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MÚSICO 1º | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Soy muy pobre y desdichado. |  | | Si voy camino y me dan |  | | mula, es lerda, trota y tira |  | | coces que la gente admira; | 55 | | tras mí por verla se van. |  | | Su coz al estribo, o dos |  | | cuando pongo en él el pie, |  | | no la perderá aunque esté |  | | delante del Rey por Dios; | 60 | | lo que es en viendo el mesón, |  | | si le abriesen las ijadas, |  | | ya las ancas bajadas, |  | | bufando como un león. |  | | Parece que estuvo más | 65 | | que con el dicho mulero |  | | a oficio de cabestrero, |  | | dos calles anda hacia atrás. |  | | Pues si tengo dama, al punto |  | | da su marido conmigo | 70 | | o su galán, y el castigo |  | | viene en palos todo junto. |  | | Si tengo amigo, me vende; |  | | si bienhechor, luego pausa; |  | | si escribano, me hace causa, | 75 | | y si es alguacil, me prende. |  | | Quien me debe, no me paga; |  | | a quien debo, cobra luego; |  | | si a hacer un vestido llego, |  | | aún no hay sastre que lo haga. | 80 | | Si almohazo algún rocín, |  | | me muerde; si sirvo a alguno, |  | | tras que todo el año hay uno, |  | | me niega el servicio al fin. |  | | Si juego algunas raciones, | 85 | |  | | | | | | —fol. 56r→ | | | |  | | pierdo y no como en un mes; |  |  |  |  | | cuando hay toros y me ves |  |  |  |  | | salir galán con rejones, |  |  |  |  | | luego el toro está conmigo |  |  |  |  | | y las calzas bigarradas | 90 |  |  |  | | muestran por las cuchilladas... |  |  |  |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MÚSICO 1º | |  | | --- | | No lo digas. | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | No lo digo. |  | | Pues con vida tan sujeta |  | | a no medrar ni comer, |  | | bien podré yo pretender | 95 | | una borla de poeta. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MÚSICO 2º | |  |  | | --- | --- | | ¿Ves todas esas desgracias? |  | | Pues mil se comen las manos |  | | tras ello. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | O locos o vanos. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Beltrán, bueno está de gracias. | 100 | | Deja cantar. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ¿Yo qué digo, |  | | sino que tu esclavo soy? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  | | --- | | Recorre esa calle,... | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Voy. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | ... que bueno vengo contigo. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MÚSICOS | |  |  | | --- | --- | | Salen de Valencia, | 105 | | noche de San Juan, |  | | mil coches de damas |  | | al fresco del mar. |  | | | | | | | | |
|  | | | | | | |
| *(Sale DOÑA JUANA en lo alto)* | | | | | |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA JUANA | |  |  | | --- | --- | | No lo cantarán por mí, |  | | aunque noche de San Juan | 110 | | a la mar las damas van, |  | | señor don Juan Castelví. |  | | Y si acaso la canción |  | | es brindis para que salga, |  | | aunque la razón me valga, | 115 | | no puedo hacer la razón: |  | | estoy sujeta a otro gusto. |  | | Vayan y vengan del grao |  | | con regocijo y sarao, |  | | pues en esta noche es justo, | 120 | | las que tuvieron ventura, |  | | y no se cante por mí. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | La noche lo quiere ansí, |  | | y que no salgáis procura; |  | | porque si vós, prenda mía, | 125 | | fuérades donde ellas van, |  | | no era noche de San Juan, |  | | que de San Juan fuera el día. |  | | Sabe el cielo cuánto fuera |  | | de mi gusto por estar | 130 | | tan de partida, y que el mar |  | | alguna templanza diera |  | | al fuego de mis sentidos. |  | | Mas quiere el amor también |  | | no dar bienes a mi bien | 135 | | porque haya menos perdidos; |  | | menos tendré que sentir |  | | cuanto menos bien tuviere. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA JUANA | |  |  | | --- | --- | | ¿Y qué bien habrá que espere |  | | la que llega a ver partir | 140 | | la misma luz con que vive? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | ¡Mal hayan obligaciones! |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA JUANA | |  |  | | --- | --- | | ¡Oh, amor! ¡Qué a punto me pones |  | | de que la vida me prive! |  | | En fin, ¿a Malta os partís? | 145 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | El nombre os dice mi mal, |  | | que a Malta voy tan mortal |  | | como vós mi bien decís. |  | | Han de salir las galeras |  | | a cierta honrosa fación, | 150 | | y es forzosa obligación |  | | seguir sus blancas banderas. |  | | Hame llamado el bailío |  | | por cinco cartas o seis |  | | con gran fuerza, y ya sabéis | 155 | | que es don Cristóbal mi tío. |  | | No hay excusa este verano. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA JUANA | |  |  | | --- | --- | | Dos o tres meses de mar, |  | | ¿quién duda que han de templar |  | | de amor el fuego? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Es en vano. | 160 | | Por vida de doña Juana, |  | | que es la vida de don Juan, |  | | y la noche de San Juan, |  | | que hace aurora esa ventana, |  | |  | | | | | | —fol. 56v→ | | | |  | | sea testigo que el mar | 165 |  |  |  | | de Italia no tiemple el fuego |  |  |  |  | | del alma si en él me anego. |  |  |  |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA JUANA | |  |  | | --- | --- | | Dios os le deje pasar. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Y para que echéis de ver |  | | que de vós memoria tengo, | 170 | | si a ver las galeras vengo |  | | de Arnauto o de Jafer |  | | o el pie pongo en Berbería, |  | | la mejor mora os prometo. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA JUANA | |  |  | | --- | --- | | Yo desde agora la aceto, | 175 | | y no para esclava mía, |  | | que amor de humilde se alaba, |  | | más por ser vuestra esa mora, |  | | porque ha de ser mi señora |  | | la que fuere vuestra esclava. | 180 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Retírate de la reja, |  | | que viene gente, señor. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Entraos, que siento rumor. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA JUANA | |  | | --- | | Pues adiós. | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | El sol me deja. |  | | | | | | | | |
|  | | | | | | |
| *(Salen DON LUIS, DON FRANCISCO, LEONELO y FINARDO arrodelados)* | | | | | |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON LUIS | |  |  | | --- | --- | | Revienta de valiente, que eso solo | 185 | | le lleva a Malta. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONELO | |  |  | | --- | --- | | Aquí requiebro tiene. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FINARDO | |  |  | | --- | --- | | No es esta noche de rondar las calles, |  | | que estará doña Juana en el grao. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON LUIS | |  |  | | --- | --- | | Paso, |  | | que por las señas le conozco. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LEONELO | |  |  | | --- | --- | | Hablémosle. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON LUIS | |  |  | | --- | --- | | Mejor será probar este soldado | 190 | | de la cruz de San Juan, pues tiene gente. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FRANCISCO | |  |  | | --- | --- | | Probar nunca lo apruebo, y al amigo |  | | o a la mujer no lo aconsejo a nadie. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON LUIS | |  |  | | --- | --- | | Callad, que es linda cosa ver un bravo |  | | sacar los pies. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FRANCISCO | |  |  | | --- | --- | | ¿Y si tuviese fuerte? | 195 | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON LUIS | |  | | --- | | Descubrirnos. | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONELO | |  |  | | --- | --- | | Bien dice. Haya chacota, |  | | que en noche de San Juan todo se sufre. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | FINARDO | |  | | --- | | ¿Quién va? | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  | | --- | | ¿Quién lo pregunta? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FINARDO | |  |  | | --- | --- | | Un caballero. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Si al caballero no le importa nada |  | | esta calle, podrá pasar por otra, | 200 | | que estoy en ella yo ocupado y creo |  | | que soy hombre de bien. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON LUIS | |  |  | | --- | --- | | Habló con ánimo. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LEONELO | |  |  | | --- | --- | | Pienso que ha de tenerle; por mi vida |  | | que nos volvamos. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON LUIS | |  |  | | --- | --- | | Vuesa merced se vaya, |  | | señor galán, de aquesta calle luego, | 205 | | que somos muchos. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Aunque muchos sean, |  | | profeso Cruz, que a muchos más me obliga. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON LUIS | |  | | --- | | Yo solo le echaré. | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Muerto, no vivo. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON LUIS | |  | | --- | | ¡Muera! | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ¡Oh, perros traidores! ¿A mi amo? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  | | --- | | ¡Aquí, Beltrán! | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Yo moriré a tu lado. | 210 | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON LUIS | |  | | --- | | Muerto soy. | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Estuviérase acostado. |  | | | | | | | | |
|  | | | | | | |
|  | | | | | | |
| *(Vanse, y salen con instrumentos moros y moras, HAMETE, RUSTÁN, SALECO, DALIMA, BRAZAIDA y ARGELINA)* | | | | | |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BRAZAIDA | |  |  | | --- | --- | | Convida el fresco del mar |  | | adonde habemos venido. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SALECO | |  |  | | --- | --- | | Parece que os ha sentido |  | | y que os ayuda a cantar | 215 | | entre esas peñas rompido. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DALIMA | |  |  | | --- | --- | | Con blanca espuma las trepa. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | RUSTÁN | |  |  | | --- | --- | | No pasará de su punta |  | | por muchas tretas que sepa, |  | | que aquí quiere Dios que junta | 220 | | entre estos límites quepa. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo no hablas, Hamete, |  | | en la noche del Bautista? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | No hay cosa que me sujete |  | | como deste mar la vista | 225 | | ni más el alma inquiete. |  | | Devoto soy deste santo |  | | de los cristianos, y tanto |  | | como os muestra mi alegría, |  | | que aquesta melancolía | 230 | | diómela el mar. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | No me espanto, |  | | que, como eres arrogante, |  | | el ver otro que lo es más |  | | no es milagro que te espante. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Miro esta tierra detrás | 235 | | y todo este mar delante. |  | | Pienso que quiso poner |  | | entre moros y cristianos |  | | Dios este mar por hacer |  | | que no pudiesen mis manos | 240 | | mostrar su furia y poder. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  | | --- | | ¿Quiéreslos mal? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Si te digo |  | | la verdad, los quiero mal. |  | | No porque soy enemigo |  | | de sus costumbres ni igual | 245 | | a los que vienen conmigo, |  | | sino de envidia que tengo |  | | a sus hechos y valor. |  | | Si a mirar sus armas vengo, |  | | conozco que a su rigor | 250 | | corta defensa prevengo. |  | | Y me admiro que soldados |  | | en la espada ejercitados |  | | usen las armas de fuego |  | | con que se les rinden luego | 255 | | tantos reinos desarmados. |  | | Los indios más les costaran |  | | si faltara esta invención. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | RUSTÁN | |  |  | | --- | --- | | Hamete, puesto que amparan |  | | de esas armas su escuadrón | 260 | | con que mil rayos disparan, |  | | no dejan si es menester |  | | la lanza y adarga. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SALECO | |  |  | | --- | --- | | Aquí |  | | gallardos los sueles ver. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Hoy hace un año que vi, | 265 | | ya después de anochecer, |  | | en este campo de Orán |  | | el valor de una persona |  | | de los que en su muro están. |  | | «Aquí está de Meliona», | 270 | | dije a su puerta, «un galán». |  | | Salió un cristiano jinete |  | | con una bandera roja |  | | y en su resguardo otros siete, |  | | y ansí, a media rienda floja, | 275 | | donde le espero arremete. |  | | Tirome un bote, reparo |  | | y por un lado le tiro, |  | | vuelve la rienda, yo paro, |  | | él busca, yo me retiro | 280 | | y de la adarga me amparo; |  | | déjole cansar, aprieta, |  | | doy un torno a la jineta |  | | de dos hierros, y el postrero |  | | le pica el rostro al overo, | 285 | | que se aparta y se inquieta; |  | | revuelve lanzando fuego, |  | |  | | | | | | —fol. 57v→ | | | |  | | espérole y entra mal, |  |  |  |  | | y a herirle en el brazo llego |  |  |  |  | | midiendo el blanco arenal | 290 |  |  |  | | su overo de polvo ciego; |  |  |  |  | | salen los dos de los siete |  |  |  |  | | y cada cual me acomete; |  |  |  |  | | vuelve a la silla el caído |  |  |  |  | | y a todos tres atrevido | 295 |  |  |  | | tira, y se defiende Hamete. |  |  |  |  | | Yo venía acompañado |  |  |  |  | | de seis moros de valor: |  |  |  |  | | Celindo de un jaco armado |  |  |  |  | | en un blanco y Almanzor | 300 |  |  |  | | fuerte en un rucio rodado; |  |  |  |  | | Bizarro en un alazán, |  |  |  |  | | el valiente Fatimán, |  |  |  |  | | en un bayo Doraycelo, |  |  |  |  | | bandera color de cielo, | 305 |  |  |  | | y en un castaño Sultán. |  |  |  |  | | Llamelos, que entre unas ramas |  |  |  |  | | amparaban mi persona, |  |  |  |  | | y dije: «¡Aquí, ganad famas, |  |  |  |  | | galanes de Meliona, | 310 |  |  |  | | vosotros que servís damas! |  |  |  |  | | ¡Ea, Sultán, pues te armas |  |  |  |  | | de empresas y de favores, |  |  |  |  | | vean estos que desarmas |  |  |  |  | | si tanto como en amores | 315 |  |  |  | | habéis en los hechos de armas!». |  |  |  |  | | Llegan y mostrando van |  |  |  |  | | que era la noche de Juan |  |  |  |  | | tan propicia a nuestra mano |  |  |  |  | | que no quedara cristiano | 320 |  |  |  | | a no tocar arma Orán. |  |  |  |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | Sentaos y dejad la guerra |  | | esta noche, por mi vida. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | RUSTÁN | |  |  | | --- | --- | | ¡Mil almas tu vida encierra! |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SALECO | |  |  | | --- | --- | | La noche y el mar convida, | 325 | | y el estar de paz la tierra. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Ese alfaquí de Toledo |  | | que en esta silla de Orán |  | | puso la suya no puedo |  | | dejar de decir, Rustán, | 330 | | que puso al África miedo. |  | | Haz cuenta que Berbería |  | | es un caballo y que, el día |  | | que ganó a Orán, de honor lleno |  | | le puso en la boca un freno | 335 | | con que le oprime y desvía. |  | | Y aunque es el caballo bueno, |  | | mal puede libre gozallo |  | | siendo el aderezo ajeno, |  | | que aunque es del turco el caballo, | 340 | | es del rey de España el freno. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué señal de enamorado |  | | más mala que hablar en guerras! |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Después que a Orán han ganado, |  | | que es costado destas tierras, | 345 | | tienen dolor de costado. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BRAZAIDA | |  |  | | --- | --- | | Levántate tú, Argelina, |  | | y danza una zambra. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | Harelo, |  | | porque Hamete se amohína |  | | de aquellas cosas que el cielo | 350 | | de nosotros determina; |  | | y querríale alegrar, |  | | masZaro me ha de ayudar. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ZARO | |  | | --- | | Ya estoy en pie. | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Dame vida, |  | | Alá, hasta verte teñida | 355 | | de cristiana sangre, ¡oh, mar! |  | | | | | | | | |
|  | | | | | | |
| *(Danzan las dos, cantando los músicos el son de la zarzuela)* | | | | | |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MUJERES | |  |  | | --- | --- | | Cristianos de Orán |  | | de gentil persona; |  | | capitán del rey, |  | | Toledo o Mendoza, | 360 | | el del blanco arnés |  | | y la banda roja |  | | labrada en la Corte |  | | por amiga hermosa... |  | | ¿Qué queréis, alarbe | 365 | | que de Meliona |  | | venís a estos campos |  | |  | | | | | | —fol. 58r→ | | | |  | | en que el nuestro aloja |  |  |  |  | | el noble soldado |  |  |  |  | | don Martín de Córdoba, | 370 |  |  |  | | general de Orán |  |  |  |  | | y de España honra? |  |  |  |  | | En este aduar |  |  |  |  | | os he visto agora, |  |  |  |  | | gallardo cristiano, | 375 |  |  |  | | esmaltar la hoja |  |  |  |  | | con tan lindo brío |  |  |  |  | | que me vuelvo loca. |  |  |  |  | | Pero sois cristiano; |  |  |  |  | | yo, en efeto, mora. | 380 |  |  |  | | Teneisme cautivo |  |  |  |  | | de quien soy esposa; |  |  |  |  | | hagamos un trueco, |  |  |  |  | | pues ansí se nombra. |  |  |  |  | | Estas gargantillas | 385 |  |  |  | | y ricas ajorcas |  |  |  |  | | os daré por ferias, |  |  |  |  | | vós allá por joyas |  |  |  |  | | dadme el moro mío. |  |  |  |  | | No puedo, señora, | 390 |  |  |  | | dar por ese precio |  |  |  |  | | un hombre que os goza. |  |  |  |  | | Si queréis quererme, |  |  |  |  | | veis aquí cien doblas |  |  |  |  | | y el que es vuestro dueño | 395 |  |  |  | | y mi esclavo agora. |  |  |  |  | | *(Vuelva el CANARIO)* |  |  |  |  | | Aunque yo quisiera, |  |  |  |  | | no quiere amor, |  |  |  |  | | que el amor forzado |  |  |  |  | | será traidor. | 400 |  |  |  | | El amor se llama |  |  |  |  | | gusto de dos: |  |  |  |  | | vós sois castellano, |  |  |  |  | | bárbara soy. |  |  |  |  | | Interés no vence | 405 |  |  |  | | justa afición; |  |  |  |  | | la crueldad enseña |  |  |  |  | | que bárbara sois. |  |  |  |  | | ¿Dónde vais huyendo? |  |  |  |  | | Hacedme un favor; | 410 |  |  |  | | llevareos a Orán |  |  |  |  | | y palabra os doy |  |  |  |  | | no querer a otra, |  |  |  |  | | sino a sola vós. |  |  |  |  | | Si os volvéis cristiana, | 415 |  |  |  | | iremos los dos |  |  |  |  | | a vivir a España. |  |  |  |  | | | | | | | | |
|  | | | | | | |
| *(Paren y digan esto las dos rezado)* | | | | | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | Confusa estoy. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ZARO | |  |  | | --- | --- | | No temáis, mi vida; |  | | casémonos hoy. | 420 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | Mucho pueden ruegos; |  | | la mano os doy. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ZARO | |  | | --- | | ¿Sois mía? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | Soy vuestra. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ZARO | |  | | --- | | Juraldo. | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | Por Dios. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Advertid que tengo celos, | 425 | | no paséis más adelante. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | Ni se baile ni se cante. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | RUSTÁN | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué temerarios desvelos |  | | son los de un celoso amante! |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BRAZAIDA | |  |  | | --- | --- | | Las doce deben de ser. | 430 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | SALECO | |  |  | | --- | --- | | Ya serán más de las doce. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | RUSTÁN | |  |  | | --- | --- | | Dalima, aquí es menester |  | | tu gran ciencia. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DALIMA | |  |  | | --- | --- | | Ansí me goce, |  | | que previne desde ayer |  | | todo lo que es necesario | 435 | | para esta noche. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Al contrario |  | | vendrá a ser todo después. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BRAZAIDA | |  | | --- | | ¿Esto es juego? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DALIMA | |  |  | | --- | --- | | Juego es. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | Y lo mismo el tiempo vario. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿Quién de toda Berbería | 440 | | no cree, como en Alá, |  | | en cualquiera hechicería? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DALIMA | |  |  | | --- | --- | | En aqueste libro está |  | | inclusa la ciencia mía. |  | |  | | | | | | —fol. 58v→ | | | |  | | Tómele, Rustán, y mire | 445 |  |  |  | | por donde quisiere abrir. |  |  |  |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | RUSTÁN | |  |  | | --- | --- | | Cosa que después aspire. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DALIMA | |  |  | | --- | --- | | La suerte lo ha de decir |  | | cuando lo que mire admire. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | RUSTÁN | |  |  | | --- | --- | | Yo habro en nombre de Alá; | 450 | | aquí un rey pintado está |  | | y sobre el hombro de un hombre |  | | tiene la mano. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DALIMA | |  |  | | --- | --- | | ¿No hay nombre? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | RUSTÁN | |  |  | | --- | --- | | Selín y Rustán bajá. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DALIMA | |  |  | | --- | --- | | Tú serás muy estimado | 455 | | del gran señor. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | RUSTÁN | |  |  | | --- | --- | | ¡Brava cosa! |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BRAZAIDA | |  | | --- | | Yo miro. | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | RUSTÁN | |  |  | | --- | --- | | Estoy admirado |  | | del libro. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | SALECO | |  |  | | --- | --- | | Es ciencia famosa. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | ¿Qué has visto? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BRAZAIDA | |  |  | | --- | --- | | Un ameno prado |  | | que tiene en medio una fuente | 460 | | de quien seis arroyos van |  | | a un mar. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DALIMA | |  |  | | --- | --- | | Tendrás brevemente |  | | seis hijos. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BRAZAIDA | |  |  | | --- | --- | | ¡Noche de Juan! |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  | | --- | | ¡Notable ciencia! | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | SALECO | |  |  | | --- | --- | | ¡Excelente! |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  | | --- | | Mira, Saleco. | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SALECO | |  |  | | --- | --- | | Aquí veo | 465 | | sobre una hermosa ciudad |  | | una corona. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DALIMA | |  |  | | --- | --- | | Es trofeo |  | | de reino y de majestad. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SALECO | |  |  | | --- | --- | | Saber las letras deseo |  | | y no da lugar la Luna. | 470 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DALIMA | |  |  | | --- | --- | | Pase la nube importuna |  | | que la cubre. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | SALECO | |  |  | | --- | --- | | Dice «Argel». |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DALIMA | |  | | --- | | Su rey serás. | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SALECO | |  |  | | --- | --- | | ¿No hay en él |  | | mejor suertes ni fortuna? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Los cristianos se riyeran | 475 | | desta vana hechicería. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | Pienso que discretos fueran. |  | | Mas ya por la dicha mía |  | | mis pensamientos se alteran. |  | | Abro el libro. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DALIMA | |  |  | | --- | --- | | ¿Y pues qué ves? | 480 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | Una dama a quien se ha ido |  | | un pájaro que por pies |  | | piensa alcanzarle. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DALIMA | |  |  | | --- | --- | | Tú has sido, |  | | y Hamete el pájaro es. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  | | --- | | Pues, ¿tú piensas irte? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿Yo | 485 | | de la prisión de tu mano? |  | | Dalima, el libro mintió. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | Hasme engañado, tirano. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | El eco dice que no. |  | | Mas dejadme ver a mí. | 490 | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DALIMA | |  | | --- | | Toma. | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | En nombre de Alá miro. |  | | Muchas cosas hay aquí; |  | | con no las creer, me admiro. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  | | --- | | ¿Son tristes? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Señora, sí. |  | | Aquí hay un mar y en la arena | 495 | | una cadena. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué pena! |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Una horca está delante |  | | con un fuego. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | No te espante |  | | horca, fuego ni cadena. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Sobre ella, señora, están | 500 | | unas cruces de San Juan |  | | que se van subiendo al cielo. |  | | ¿Qué será aquesto? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DALIMA | |  |  | | --- | --- | | Recelo |  | | que mil vitorias te dan. |  | | Que el mar, horca, hierro y fuego | 505 | | muestran que has de tener luego |  | | de Malta y Rodas esclavos |  | | que con tormentos tan bravos |  | | has de tratar. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Eso niego, |  | | que nunca esclavo traté | 510 | | con tal rigor; solo al pie |  | | les puse hierro en la mar. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DALIMA | |  |  | | --- | --- | | No le quise declarar |  | | su mal. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  | | --- | | Triste estoy. | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿Por qué? |  | | | | | | | | |
|  | | | | | | |
| *(Entra ZAIDE)* | | | | | |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ZAIDE | |  |  | | --- | --- | | Si alguna vez, Hamete generoso, | 515 | | deseoso de gloria te ha tenido |  | | el fuerte corazón, la noble sangre |  | |  | | | | | | —fol. 59r→ | | | |  | | y el nombre de galán de Meliona, |  |  |  |  | | tan temido en España y en Italia, |  |  |  |  | | deja las fiestas desta alegre noche, | 520 |  |  |  | | tus galeotas prósperas desata, |  |  |  |  | | corre el sereno mar, roba en su costa |  |  |  |  | | un navío que pasa a Argel tan rico |  |  |  |  | | de granas, telas, paños y bonetes |  |  |  |  | | que vale más de treinta mil ducados. | 525 |  |  |  | | Yo le dejé con calma ayer bien cerca |  |  |  |  | | y me atrevo a ponértele en las manos. |  |  |  |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Argelina, en llegando a cosas de honra |  | | cesa el amor. Perdona, que me aparto |  | | con Zaide a descubrir este navío | 530 | | cuyas granas y telas te prometo, |  | | si quiere Alá que pueda darle alcance. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | Pájaro, en fin, como lo dijo el libro. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Líbreme Dios de que en el libro crea. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | RUSTÁN | |  |  | | --- | --- | | La ocasión es famosa. ¿En qué te tardas? | 535 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Adiós, amigos; que mañana al alba |  | | tengo de ser señor deste navío. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | Dalima, ¿qué es aquello de mi Hamete? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DALIMA | |  |  | | --- | --- | | Gran daño la fortuna le promete. |  | | | | | | | | |
|  | | | | | | |
| *(Éntranse, y salgan DON JUAN CASTELVÍ y BELTRÁN)* | | | | | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Próspero ha sido el camino. | 540 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Estimar en más debieras |  | | llegar cuando las galeras |  | | se parten. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Yo determino |  | | ir, Beltrán, esta jornada: |  | | deseo ganar honor | 545 | | mientras me impide el rigor |  | | volver a la patria amada |  | | de la justicia, aunque estoy |  | | de aquel delito inocente. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Que un hombre amigo y pariente | 550 | | injusto nombre le doy. |  | | Llegue a probar a su amigo |  | | y se burle con la espada. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Que es toda burla pesada, |  | | declara bien su castigo. | 555 | | El cielo maldiga, amén, |  | | estos necios ignorantes |  | | que con burlas semejantes |  | | en tal vergüenza se ven. |  | | Si soy cobarde me prueba, | 560 | | y de una estocada mía |  | | llevó de mi valentía |  | | al otro mundo la nueva. |  | | Dios le perdone; ya es hecho: |  | | su muerte él mismo buscó. | 565 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Algunos he visto yo |  | | llegados al punto estrecho |  | | de un peligro y de una afrenta |  | | por hacer burlas pesadas. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | ¡Que las personas honradas | 570 | | no quieran que un hombre sienta |  | | que se burlen con su honor...! |  | | | | | | | | |
|  | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ¡Que estudie un hombre un pesar |  | | por reír y por burlar...! |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué gran señal de traidor! | 575 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Por lo menos ha de ser |  | | fingido el que burlas hace. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | De pechos traidores nace. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | En mi vida pude ver |  | | estos bellacos burlones | 580 | | de falsa fisionomía. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Ya será la historia mía |  | | ejemplo en mil ocasiones. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | El hombre grave, señor, |  | | siempre ha de estar muy de veras. | 585 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué burlas tan verdaderas! |  | | ¡Qué fuerte prueba de honor! |  | | ¡Ay, Juana, ya te perdí! |  | | ¡Ay, Valencia, patria mía, |  | | con qué tristeza aquel día | 590 | | de tus murallas salí! |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Ya no hay que tratar de Juana, |  | | sino de cruz de San Juan, |  | | pues las galeras se van |  | | y es agua y cielo mañana. | 595 | | Yo tengo determinado |  | | en viendo el moro, señor, |  | | mostrar que tengo valor |  | | con la hojarasca del lado. |  | | Quizá que la religión | 600 | | me dará una cruz, martillo |  | | de aquestas, quiero decillo, |  | | que como bonetes son, |  | | que con tres picos no más |  | | si se dobla el ferreruelo | 605 | | parece entera. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Recelo |  | | que merecerla podrás |  | | si muestras español brío. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Aunque sea de tres pies, |  | | ¿no es cruz de San Juan? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Sí es. | 610 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Alto pensamiento mío, |  | | que poco importa el pie cojo. |  | | Cruz blanca el vulgo la llama; |  | | yo la traeré como dama |  | | tapándola de medio ojo. | 615 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Quien la tiene, ansí la lleva. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | A leva tocan, señor. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Adiós, patria; adiós, amor, |  | | que toca el honor a leva. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MÚSICOS | |  | | --- | | *(Canten dentro)* | | Zarpa la capitana, | 620 | | tocan a leva, |  | | y los ecos responden |  | | a las trompetas. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  | | --- | | ¿Quién canta? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Músicos son |  | | del general que en la popa | 625 | | van cantando. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | MÚSICOS | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | Fuera ropa. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Aquella es crüel canción. |  | | ¿No escuchas el pito? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Sí. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Vive Cristo, que aquel pito |  | | mete por el alma el grito | 630 | | que haya quien no tiemble aquí. |  | | ¡Que no viva un hombre bien |  | | por no verse en tanto mal...! |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Ya se embarca el general. |  | | Beltrán, a la barca ven. | 635 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Bravo tendal de Damasco. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Con música le recibe |  | | la capitana. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Apercibe |  | | que soy Beltrán de Velasco, |  | | y que me has de honrar, señor, | 640 | | llamándome ‘camarada’ |  | | por la pretensión honrada |  | | y por tu mismo valor. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Yo diré que eres, Beltrán, |  | | un hidalgo amigo mío | 645 | | que no te ha visto mi tío |  | | ni aquí te conocerán. |  | | Pero has de portarte bien |  | | y mostrar término honrado. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Tú me verás a tu lado | 650 | | más ancho que un palafrén. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Mi tío viene a embarcarse |  | | con otros comendadores. |  | | | | | | | | |
|  | | | | | | |
|  | | | | | | |
| *(Sale DON CRISTÓBAL, ya viejo, con bastón, y otros de cruz blanca; el bailío la traiga que tome todo el pecho)* | | | | | |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | No hay que detener, señores, |  | | ni ahora es tiempo de ocuparse. | 655 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Deme vuestra señoría |  | | los pies. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | Sobrino, ¿qué es esto? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Obedecerte más presto |  | | que allá pensé que podría. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | Notable gusto me has hecho. | 660 | | ¿La patria? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Buena, señor. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  | | --- | | ¿Mi hermana? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Llena de amor |  | | y ansias de verte. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | Sospecho |  | | que al fin de aquesta jornada |  | | volveré a España. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Los pies | 665 | | me dad a besar. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | ¿Quién es? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Un hidalgo camarada. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | Pues deme los brazos luego. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Con mucho tiento, Beltrán. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Camarada de don Juan | 670 | | soy; y perdonad, que llego |  | | no bien puesto del camino. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | Ansí ha de estar el soldado. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Seis baúles me han robado, |  | | de que vengo algo mohíno. | 675 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | Si quiere vuesa merced |  | | de mi recámara en tanto... |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | No lo decía por tanto, |  | | aunque lo tendré a merced. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | ¿En qué ocasiones se ha hallado | 680 | | vuesa merced? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Yo, señor, |  | | en muchas. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | En su valor |  | | se muestra. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Soy gran soldado. |  | | Yo serví al señor don Juan. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | ¿En qué jornada sería? | 685 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Era en la repostería. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  | | --- | | ¿Cómo? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué dices, Beltrán? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | En Bruselas y en Malinas |  | | y en Gante le serví yo. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | ¿Con qué tercio se embarcó? | 690 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Con un tercio de sardinas. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  | | --- | | ¿Qué dice? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Es de aqueste humor. |  | | Perderase cada día |  | | por él vuestra señoría. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | Cobrándole voy amor. | 695 | | Ya vuesa merced primero |  | | se hallaría en la naval. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Sí, señor: un mes cabal |  | | he estado en Navalcarnero. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | Por mi vida que me agrada | 700 | | la camarada, sobrino; |  | | no habréis sentido el camino |  | | con tan buena camarada. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | UN CANARIO | |  |  | | --- | --- | | Ya se acosta la galera. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | Llegue ese turco la plancha. | 705 | | ¿Qué le dice el mar? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Que es ancha. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | ¿Debajo de qué bandera, |  | | que aún hay capitanes vivos, |  | | militó vuesa merced? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | De un fraile de la merced | 710 | | que iba a rescatar cautivos. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  | | --- | | ¿Agrádale Malta? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Poco; |  | | pero si en vino estuviera |  | | como está en agua, me hiciera |  | | volver de contento loco. | 715 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | De Candia lo hay bueno aquí. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  | | --- | | ¿Cómo ha nombre? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | Malvasía. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Probar tantico querría. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  | | --- | | Coma conmigo. | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Sea ansí. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | Sobrino, el hombre es de gusto. | 720 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Mucho te ha de entretener. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  | | --- | | ¿A qué viene? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | A pretender |  | | un martillo. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | Pues es justo |  | | que, en volviendo, se le demos. |  | | Señores, alto a embarcar, | 725 | | que nos da voces el mar |  | | para que a pisarle entremos. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  | | --- | | ¿Qué te parece? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Que estás |  | | muy en gracia de mi tío. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Ve delante, señor mío; | 730 | | pero no, que has de ir detrás. |  | | | | | | | | |
|  | | | | | | |
|  | | | | | | |
| *(Váyanse y entren el LICENCIADO HERRERA y LAURENCIO, criado suyo, en Málaga)* | | | | | |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HERRERA | |  | | --- | | Hermosa ciudad Málaga. | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | Famosa. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HERRERA | |  |  | | --- | --- | | Mucho el mar la ennoblece y la enriquece. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | Si tuviera Toledo en vez del Tajo |  | | este famoso mar, notable fuera. | 735 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HERRERA | |  |  | | --- | --- | | Tal vez, que las crecientes del invierno |  | | cubren las huertas que del rey se llaman. |  | | Parece el Tajo un mar, pero no pueden |  | | subir la cumbre de sus altos montes |  | | ni trepar a la altura de sus casas. | 740 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | Por esta mano está Marbella y corre |  | | la costa a Gibraltar, que tiene enfrente |  | | a Tánger, Ceuta, Mazagán y Arcila; |  | | Tarifa, Ronda, Cádiz y Sanlúcar |  | | siguen la costa hasta Ayamonte y Lepe; | 745 | | luego por Portugal muestra una punta, |  | | de San Vicente el Cabo. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HERRERA | |  |  | | --- | --- | | Estotra parte |  | | es costa de Granada y Almería; |  | | en el Cabo de Gata está la punta |  | | que a Melilla y Orán enfrente tiene; | 750 | | Cartagena, Alicante, Denia, Oliva... |  | | siguen la costa luego a los Alfaques |  | | hasta que Palamós y Barcelona |  | | abren la puerta al Golfo de Narbona. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  | | --- | | ¿Cuándo te quieres ir? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HERRERA | |  |  | | --- | --- | | Si no tuviera | 755 | | cartas de Gaspar Suárez, en Toledo |  | | las fiestas de San Juan pienso que viera. |  | | Mas, por hacerle este placer, no puedo. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  | | --- | | ¿Qué escribe? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HERRERA | |  |  | | --- | --- | | Escucha: «Al Licenciado Herrera, |  | | que guarde Dios». |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | Bien satisfecho quedo, | 760 | | que, pues tú te detienes, es muy justo |  | | hacer lo que te escribe y darle gusto. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HERRERA | |  | | --- | | *(Lea)* | | «Porque el parabién me deis, |  | | que tanto bien me ha causado. |  | | Yo me he casado, y casado | 765 | | con la prenda que sabéis. |  | | Mi prima y yo somos ya |  | | marido y mujer, señor, |  | | que parentesco en amor |  | | como oro en azul está. | 770 | | Yo he vestido mi afición |  | | del casamiento que estima, |  | |  | | | | | | —fol. 61r→ | | | |  | | porque pienso que una prima |  |  |  |  | | es la mejor guarnición. |  |  |  |  | | Grandes fiestas hemos hecho, | 775 |  |  |  | | que deudos tan principales |  |  |  |  | | dan en ocasiones tales |  |  |  |  | | muestras de su noble pecho. |  |  |  |  | | Casa hemos puesto también, |  |  |  |  | | porque dos primos casados | 780 |  |  |  | | con sesenta mil ducados |  |  |  |  | | bien pueden ponerla bien. |  |  |  |  | | Treinta, y más, el dote vale |  |  |  |  | | de doña Leonor; mi hacienda, |  |  |  |  | | ya la sabéis; mas no hay prenda | 785 |  |  |  | | que con su virtud se iguale. |  |  |  |  | | Para mis caballos tengo |  |  |  |  | | notable necesidad |  |  |  |  | | de un esclavo. Esa ciudad, |  |  |  |  | | que por saberlo os prevengo, | 790 |  |  |  | | suele tener abundancia |  |  |  |  | | de algunos de Berbería; |  |  |  |  | | compradme, por vida mía, |  |  |  |  | | un alarbe de importancia |  |  |  |  | | para el oficio que os digo, | 795 |  |  |  | | mozo fuerte y de buen talle, |  |  |  |  | | que quiero en esto ocupalle |  |  |  |  | | y para que ande conmigo. |  |  |  |  | | Que esta merced, como es justo, |  |  |  |  | | con las demás la pondré, | 800 |  |  |  | | y en vuestro servicio haré |  |  |  |  | | lo que fuere vuestro gusto. |  |  |  |  | | Dios os guarde, de Toledo |  |  |  |  | | y junio». |  |  |  |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | Razón será |  | | que se le lleves. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HERRERA | |  |  | | --- | --- | | Está | 805 | | con este gusto, y no puedo |  | | dejar de esperar aquí |  | | que desembarquen algunos. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | ¿No hay en la ciudad ningunos? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HERRERA | |  |  | | --- | --- | | Dos o tres pienso que vi, | 810 | | pero no en bastante edad |  | | para lo que es menester. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | Hoy le puedes responder. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HERRERA | |  |  | | --- | --- | | Débole amor y amistad. |  | | Ven a la iglesia. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | No puedo | 815 | | dejar de acordarme en ella |  | | de aquella máquina bella |  | | de nuestra insigne Toledo. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HERRERA | |  |  | | --- | --- | | Muy linda es esta, y lo son |  | | cuantas a Dios aposentan. | 820 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | La mar ven, si aquí se asientan. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HERRERA | |  |  | | --- | --- | | Entra; hagamos oración. |  | | | | | | | | |
|  | | | | | | |
| *(Váyanse, y en una parte de lo alto del teatro se vea una galeota turca con sus velas y lunas, y en la popa moros y HAMETE y ARGELINA)* | | | | | |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Nunca pensé que tuvieras |  | | ánimo de acompañarme. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | Aquel libro de Dalima, | 825 | | Hamete amigo, fue parte, |  | | porque si el pájaro eres |  | | que al viento la pluma esparces, |  | | no quiero yo que te vayas |  | | ni de mi mano te apartes | 830 | | para que no cantes libre, |  | | sino que en mi jaula cantes. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿Que se me fuese el navío? |  | | ¿Que no pudiese alcanzalle? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | Vuélvete, por vida mía; | 835 | | no le sigas ni te canses. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Codicioso de las telas |  | | que pensaba presentarte, |  | | me parecen, Argelina, |  | | pequeños los anchos mares. | 840 | | Por el mar Mediterráneo |  | | me obliga tu amor que pase, |  | | entre Formentera y Denia, |  | | entre Ibiza y Alicante, |  | | entre Mallorca y Oliva, | 845 | | Moncolibre y los Alfaques; |  | | y llegaré hasta Colibre |  | | por todo el mar de Levante. |  | |  | | | | | | —fol. 61v→ | | | |  | | Pero, tened; ¿qué es aquello |  |  |  |  | | que ha dos días que me trae | 850 |  |  |  | | sospechoso? Vive Alá |  |  |  |  | | que, si no refresca el aire, |  |  |  |  | | que hemos dado con las cruces |  |  |  |  | | de San Juan. ¡Oh, chusma infame! |  |  |  |  | | ¡Boga, boga! ¡Arranca, perro! | 855 |  |  |  | | ¡Mátame ese bogavante, |  |  |  |  | | que nos alcanzan! ¡Villanos! |  |  |  |  | | ¡Pues, si desnudo el alfanje, |  |  |  |  | | nariz ni oreja no pienso |  |  |  |  | | que le ha de quedar a nadie! | 860 |  |  |  | | | | | | | | |
|  | | | | | | |
| *(Disparando se descubra otra cortina en la otra parte y se vea una galera de San Juan llena de estandartes con las cruces blancas, y en ella DON CRISTÓBAL, DON JUAN y BELTRÁN y otros comendadores)* | | | | | |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | ¡Ea, turcos! ¡Ea, amigos! |  | | Ninguno se me acobarde, |  | | que tendréis lindo refresco |  | | de pan blanco, vino y carne. |  | | ¡Por vida del gran Maestre, | 865 | | dispara, boga! |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | No hay ave |  | | que corra como sus leños, |  | | que dudo que ya me alcancen. |  | | ¡Pesar de Mahoma! ¡Perros! |  | | ¡Boga! |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  | | --- | | ¡Ay, triste! | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | Di que amainen | 870 | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  | | --- | | ¡Amaina! ¡Amaina! | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | Echa a fondo |  | | si no amaina. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¡Amaina, Zaide! |  | | Ya abordan. ¿Qué haré, Argelina? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  | | --- | | Rendirte. | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¡Mahoma infame! |  | | ¡Vil hechicera Dalima! | 875 | | ¿Estas fueron las señales |  | | de las cruces de San Juan? |  | | Ya saltan; quiero matarme. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  | | --- | | ¡Tente, perro! | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿Que me tenga? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | ¡Tente, perro! ¡Tente y date! | 880 | | ¡Y la mora esté por mía! |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Antes que te dé el alfanje, |  | | di quién eres. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Español; |  | | y Castelví por linaje. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | ¿De qué lugar? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | De Valencia. | 885 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué de cuentas pide! Acabe |  | | o meterele en la boca |  | | tres palmos de la de juanes. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  | | --- | | ¿Quién eres, pirata? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿Yo? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  | | --- | | Tú, pues. | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | El nombre declare, | 890 | | aunque el de pila no puede, |  | | o harele el rostro dos partes. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | ¿Eres Jafer o Mami? |  | | ¿Eres Saleco o Arnaute? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | No soy tan cosario, no. | 895 | | Hamete soy. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | ¿De qué parte? |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Galán soy de Meliona, |  | | de los moros benarajes |  | | que de España procedieron. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  | | --- | | ¿Dónde ibas? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | No a buscarte, | 900 | | aunque te halló mi desdicha. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  |  | | --- | --- | | En la persona y el talle |  | | pareces hidalgo moro. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Si estuviéramos iguales |  | | de galeras y de gente, | 905 | | no llevaras tan de balde |  | | estas pobres galeotas |  | | ni tú, cristiano arrogante, |  | | a caballo cuerpo a cuerpo |  | | me quitaras el alfanje. | 910 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Cuando en el campo de Orán |  | | con lanza y adarga salen |  | | los cristianos, ya sabéis |  | | que no os alabáis, alarbes. |  | | Y cuando yo allí me viera, | 915 | | supiera también quitarte |  | | el alfanje con la vida. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | ¿Tú? ¿Sí? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  | | --- | | *(A Hamete)* | | No osaras mirarme. |  | | *(A don Cristóbal)* |  | | Merced me has de hacer, señor, |  | | que la tendré por notable, | 920 | | de que Beltrán a Valencia, |  | | porque no quiero rescate, |  | |  | | | | | | —fol. 62r→ | | | |  | | estos dos esclavos lleve. |  |  |  |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  | | --- | | ¿Para quién son? | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Para un ángel. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON CRISTÓBAL | |  | | --- | | Ea, boga. | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ¡Linda presa! | 925 | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON JUAN | |  |  | | --- | --- | | Tu ayuda ha sido importante. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Si no es por mí, no se prenden. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Que voy a España, y que guarde |  | | la vida para esta afrenta. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ARGELINA | |  |  | | --- | --- | | En tanto que no me faltes, | 930 | | libertad es la prisión. |  | | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | ¡Por Alá que he de vengarme! | | | | | | | | |
| **Acto II** | | | | | |
|  | | | | | |
| *Salen BELTRÁN de soldado y HAMETE de cautivo* | | | | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Esta es, Hamete, Valencia. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Ella es hermosa ciudad, |  | | que en grandeza y majestad |  | | hace a todas competencia |  | | cuantas he visto en España. | 5 | | Mas, ¿dónde queda Argelina? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Donde don Juan determina. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¡Oh, cuánto el amor engaña! |  | | Tuve esperanza hasta aquí |  | | que sirviéramos los dos | 10 | | a un dueño juntos. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ¡Por Dios |  | | que lo mismo pretendí! |  | | Pero apenas doña Juana |  | | supo que eras su marido, |  | | aunque moro bien nacido | 15 | | en la nobleza africana, |  | | cuando me mandó venderte |  | | y no te quiere en su casa. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | ¿Cierto? | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Digo lo que pasa. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué tardas, cobarde muerte? | 20 | | Pues, di: ¿qué le hiciera yo? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | No quiso en su casa amores. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿No éramos los dos mejores |  | | para solo un dueño? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | No, |  | | porque dos enamorados | 25 | | más son para ser servidos |  | | que para servir, perdidos |  | | en sus celosos cuidados. |  | | Tras esto, cuando te vio |  | | que con una mano alzaste | 30 | | la carga y que la llevaste |  | | donde Beatriz te enseñó, |  | | dice que le diste miedo. |  | | Lleva con paciencia alguna |  | | este golpe de fortuna, | 35 | | pues asegurarte puedo |  | | de venderte en la ciudad |  | | donde verás cada día |  | | tu esposa. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Tus pies querría |  | | besar por tanta amistad. | 40 | | Que como hay correspondencia |  | | de Argel, Tremecén y Orán |  | | a Valencia, bien podrán |  | | verme y buscarme en Valencia. |  | | Tras esto, hay moros aquí | 45 | | con quien lo podré tratar. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Tú quedas en buen lugar, |  | | tal me sucediera a mí, |  | | donde apenas sentirás |  | |  | | | | | | —fol. 62v→ | | | |  | | la prisión. |  |  |  |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Ansí lo creo; | 50 | | de verle tuve deseo. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Despacio verle podrás. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | ¿Qué casa es esta? | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | El mesón |  | | adonde nos apeamos. |  | | | | | | | |
|  | | | | | |
| *(Salen DON MARTÍN de camino y PÁEZ, mozo de mulas)* | | | | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Pues, ¿a qué al mesón tornamos? | 55 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Yo te diré la ocasión: |  | | aquí te vieron algunos |  | | que trataron de comprarte. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Ya vi más de dos rogarte |  | | por mi persona importunos. | 60 | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  | | --- | | Páez... | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  | | --- | | ¿Señor? | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | Apercibe |  | | lo necesario y partamos. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | Cuando quisieres nos vamos. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Como hombre noble recibe |  | | estas desdichas, Hamete. | 65 | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | ¿El moro volvéis acá? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | La mora he dejado allá. |  | | Pero por más que promete |  | | ser fïel y servicial |  | | Hamete, no le ha querido, | 70 | | porque, viendo a su marido, |  | | teme que la sirva mal. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | Yo me había aficionado |  | | al moro. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | No os le vendí |  | | entonces porque entendí | 75 | | que le hubiera contentado. |  | | Agora ella propia quiere |  | | que le venda, y me lo manda. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | Bien en apartarlos anda. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿Ya no hay remedio que espere? | 80 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | Dejádmele ver y hablar. |  | | ¿Qué nación? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Alarbe soy. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  | | --- | | ¿Eres noble? | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | No, que estoy |  | | donde me puedes comprar. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  | | --- | | ¿Quién te cautivó? | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Un bailío | 85 | | de San Juan con seis galeras. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | Luego tú cosario eres. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿No ves en mi talle y brío |  | | si soy hombre de valor? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | Tu tristeza da a entender | 90 | | que no lo debes de ser. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | No te espantes: tengo amor. |  | | Otra vez cautivo fui |  | | y no sentí la prisión; |  | | mas quiero bien y es pasión | 95 | | que más que yo puede en mí. |  | | Don García de Toledo |  | | me prendió, siendo tan mozo |  | | que aún no me apuntaba el bozo, |  | | por arrojarme sin miedo | 100 | | a temerarias empresas. |  | | Allí lo que sé aprendí |  | | de vuestra lengua. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | De ti, |  | | pues que la guerra profesas, |  | | estoy cierto que serás | 105 | | noble, y vese en tu persona. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Galán soy de Meliona; |  | | no puedo decirte más. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  | | --- | | ¿Fuerzas tienes? | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Fuerzas tengo. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué fuerzas puede tener | 110 | | un perro de agua? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¡A placer, |  | | que esto sufro y no me vengo! |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | Apostemos quién levanta |  | | más peso. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Porque te asombre, |  | | ¿quieres que levante un hombre | 115 | | puesta en mi palma su planta? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | ¿A un hombre levantarás? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Yo lo he visto. No porfíes |  | | ni, atrevido, desafíes |  | | al moro, que perderás. | 120 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo perder? Si es tan bravo, |  | | salga y luchemos aquí. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | ¿Tú conmigo? | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  | | --- | | Yo. | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | ¿Tú? | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | Sí. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Iguálasme; soy esclavo. |  | | Mas, ¿da licencia Beltrán | 125 | | que luchemos este y yo? |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  | | --- | | ¿Tú con este? | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿Por qué no? |  | | | | | | | |
|  | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | ¡Oh, qué arrogantes están! |  | | Pues lucharé con los dos. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Hable despacio, galán, | 130 | | que no conoce a Beltrán. |  | | Beltrán es hombre, por Dios, |  | | que con rodela y espada |  | | rindió solo la galera |  | | deste moro, y que pudiera | 135 | | del turco toda la armada. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Cristiano, pues que te precias |  | | de suerte, dame esa mano. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  | | --- | | ¿Es de amistad? | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Sí, cristiano. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | Mira que las tengo recias. | 140 | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Pues apriétame sin miedo. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  | | --- | | ¡Ay, ay, ay! ¡Suelta! | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué es eso? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay, no me ha dejado hueso! |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Lo mismo haré con un dedo. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | Pesia al moro y quien lo vende. | 145 | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  | | --- | | ¿Yo no os avisé? | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | ¡Gran fuerza! |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Di que este brazo me tuerza. |  | | Llega; la mano me prende. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  | | --- | | *(Pruébele)* | | A ver. Fuerte brazo tienes: |  | | diez hombres no bastarán. | 150 | | Véndeme el moro, Beltrán. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Aficionándote vienes. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Si tienes dos herraduras, |  | | romperelas juntas; muestra. |  | | Y porque la amistad nuestra | 155 | | se firme, si la procuras, |  | | vuélveme a tocar la mano. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  | | --- | | ¿Cómo la mano? | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | Beltrán, |  | | ¿han puesto precio? ¿Qué dan |  | | por este alarbe africano? | 160 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Si tienes gusto, has de dar |  | | dos mil reales por el moro. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | ¿Quieres cien escudos de oro, |  | | y vámoslos a contar? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Tuyo sea; que yo sé | 165 | | que en las ventas, la primera. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | ¡Lleve el diablo quien tal diera! |  | | ¡Ni aun cien ochavos! |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | ¿Por qué? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | Porque es llevar un demonio. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | Ven a contar tu dinero; | 170 | | llama a un notario, que quiero |  | | que me haga un testimonio. |  | | Hamete, ¿caminas bien? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿Por qué lo dices, señor? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | Porque también tengo amor | 175 | | y estoy ausente también. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Luego, ¿tú no eres de aquí? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | De Málaga, Hamete, soy, |  | | y luego al punto me voy. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | ¿De Valencia te vas? | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | Sí. | 180 | | Por eso, apresta los pies. |  | | Ea, Páez: a ensillar. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | ¿Que este habemos de llevar? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | ¿Cuál para la huerta es? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | ¿Y cómo? No tengas pena | 185 | | que a la fruta osen llegar. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Rabiando estoy de pesar: |  | | partirse el cristiano ordena. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Hamete, a mí me ha pesado |  | | de que sea forastero, | 190 | | pero al fin es caballero. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Si de algo estoy consolado |  | | es de que en Málaga viva. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | También es puerto de mar, |  | | adonde podrás tratar | 195 | | de rescatar tu cautiva. |  | | | | | | | |
|  | | | | | |
| *(Éntrense, y salgan dos alcaldes villanos: SALICIO y SOLANO)* | | | | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | SALICIO | |  |  | | --- | --- | | Muy bien se hará la fiesta dese modo. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | SOLANO | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué culpa tuve yo si el toro es ido? |  | | | | | | | |
|  | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SALICIO | |  |  | | --- | --- | | A vuestro cargo estaban las carretas |  | | para tapar las calles. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SOLANO | |  |  | | --- | --- | | Yo las puse | 200 | | desde que el alba se riyó en el cielo, |  | | y con mucho cuidado. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SALICIO | |  |  | | --- | --- | | Pues, ¿por dónde |  | | se trascoló el novillo? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SOLANO | |  |  | | --- | --- | | Cuando quiso |  | | que al corredor del regimiento entrase, |  | | con verdugado, su mujer el médico, | 205 | | abrieron un portillo temerario. |  | | Y por donde mujer con verdugado |  | | pudo entrar, ¿no queréis que salga un toro, |  | | que puede con su trompa un elefante |  | | y un camello también con su corcova? | 210 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SALICIO | |  |  | | --- | --- | | Pagarnos tiene el médico la burla; |  | | y el toro, si le matan en el campo. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SOLANO | |  |  | | --- | --- | | No os lo aconsejo, que vengarse puede |  | | con solo hacer del ojo al boticario. |  | | | | | | | |
|  | | | | | |
| *(Suene dentro ruido y silbos del toro)* | | | | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | UNO | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | ¡Ataja! ¡Ataja! | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | OTRO | |  |  | | --- | --- | | ¡El diablo que le tenga! | 215 | | ¡A las viñas se va! |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SALICIO | |  |  | | --- | --- | | ¡Par diez, que dicen |  | | que se va por las viñas! |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SOLANO | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué más quieren |  | | los muchachos? Hoy hacen su vendimia. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | SALICIO | |  | | --- | | Pues, ¿cuánto va que son las vuesas? | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | SOLANO | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | SALICIO | |  |  | | --- | --- | | Son las que del lugar están más cerca. | 220 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SOLANO | |  |  | | --- | --- | | ¡Voto al Sol! Si eso fuese, que le había |  | | de sentenciar al toro en todo el daño. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | SALICIO | |  | | --- | | ¿Y de qué pagará? | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | SOLANO | |  |  | | --- | --- | | De sus costillas. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | UNO | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | ¡Ataja! ¡Ataja! | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | SALICIO | |  |  | | --- | --- | | Mas, ¡que vuelve el toro! |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | Quítate acá; no te le acerques, moro. | 225 | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | SOLANO | |  |  | | --- | --- | | Allá anda envuelto en unos forasteros. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | SALICIO | |  |  | | --- | --- | | Vamos a ver lo que es, que todo es fiesta. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SOLANO | |  |  | | --- | --- | | Llevemos a las viñas las mujeres |  | | y corrámosle allá, pues que no gusta |  | | de que sea en la plaza. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | UNO | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | ¡Guarda el toro! | 230 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | OTRO | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | Por los dos cuernos le ha rendido el moro. |  | | | | | | | |
|  | | | | | |
| *(Silben y griten, y salgan DON MARTÍN, PÁEZ y HAMETE)* | | | | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | Demonio debes de ser. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | Yo di cien escudos de oro |  | | sobre los cuernos del toro. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Que no hay, señor, que temer. | 235 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo? No, cuerpo de tal; |  | | no te burles de esa suerte, |  | |  | | | | | | —fol. 64r→ | | | |  | | que un toro es bestia muy fuerte. |  |  |  |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Sí, pero en fin animal. |  | | ¿Un hombre que no sujeta | 240 | | con la industria y el valor? |  | | Esto es muy poco, señor. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | Mi dinero me inquieta. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | En África, por instantes |  | | vamos a cazar leones, | 245 | | que a los postreros arzones |  | | suelen saltar arrogantes |  | | y deshacer el jinete, |  | | donde a veces ha llegado |  | | alarbe que, por el lado, | 250 | | toda la lanza le mete. |  | | Yo he muerto más de cuarenta. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | Tiemblo, vive Dios, del moro. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | Yo sé que en España un toro |  | | el león más bravo afrenta, | 255 | | que en el Real de Valencia |  | | Vespasiano, deseoso |  | | de ver si es tan valeroso |  | | que hace a un león resistencia, |  | | encerró un toro y león | 260 | | y un caballo que jamás |  | | sufrió silla. ¿Pensarás |  | | que los mató? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿No es razón? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | Pues no osó llegar al toro. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | ¿Y el caballo? | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | Defendió | 265 | | su vida a coces. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿Salió |  | | manso? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | Que valió un tesoro, |  | | porque era bello y bien hecho; |  | | y fue tal desde aquel día, |  | | que un muchacho le corría. | 270 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | La comparación que has hecho |  | | es, señor, muy desigual, |  | | que un doméstico león |  | | no sufre comparación |  | | al que está en su natural; | 275 | | que un oso es fiero y, crïado |  | | en casa, juega y retoza. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | Mucho esta fuente se goza |  | | de guarnecer este prado. |  | | No entremos en el lugar | 280 | | por el alboroto y fiesta. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | Alhombra y cama está puesta. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | La mula puedes atar, |  | | y pazca esa verde yerba |  | | en tanto que duermo aquí. | 285 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | No faltará para ti |  | | pan, queso, bota y conserva. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | En durmiendo un cuarto de hora. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  | | --- | | Recuéstate. | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | Allí te asienta |  | | con Hamete. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | Tú me cuenta, | 290 | | Hamete, tu vida agora. |  | | | | | | | |
|  | | | | | |
| *(Échase a dormir DON MARTÍN y siéntense PÁEZ y HAMETE)* | | | | |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | En vida tan mal gastada |  | | poco habrá que te contar. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | Ya comienzo a bostezar. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | ¿Es eso sueño? | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | No es nada. | 295 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Nací en África, ya sabes |  | | el lugar. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | ¿Es buena tierra? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Buena para hombres de guerra. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  | | --- | | ¿Buenos caballos? | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Son aves |  | | y grandes trabajadores; | 300 | | tienen uñas por las peñas. |  | | Las ciudades son pequeñas, |  | | los ánimos son mayores. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  | | --- | | ¿Hay iglesias? | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Hay mezquitas. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  | | --- | | ¿Allá no hay obispos? | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | No. | 305 | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  | | --- | | Pues, ¿qué? | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | Alfaquíes. | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | Si yo, |  | | Hamete, no encuentro ermitas, |  | | que acá ‘tabernas’ llamamos, |  | | por la tierra que camino, |  | | no voy con gusto. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | No hay vino; | 310 | | mas del agua ardiente usamos. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  | | --- | | ¿Hay perniles? | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué es perniles? |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  | | --- | | Muslos de puerco. | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Mahoma |  | | los quitó por ley. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | Pues coma |  | | el perrazo pasas viles. | 315 | | | | | | | |
|  | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Habla bien, pues habla el moro |  | | tan bien de vuestro Bautista. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | Cerrado se me ha la vista; |  | | llámame si vuelve el toro. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Amo y mozo se han dormido. | 320 | | ¡Ay, Argelina! ¿Qué haré? |  | | ¿Cómo mi bien te deje? |  | | ¿Cómo tan ingrato he sido? |  | | Pero yo no pude más, |  | | que la libertad no es mía. | 325 | | ¿Cómo a verte volvería |  | | a la ciudad donde estás? |  | | ¿Será buen medio dar muerte |  | | a estos dos? Mas no será, |  | | porque, cuando vaya allá, | 330 | | más voy a morir que a verte. |  | | Porque, ¿a quién he de llegar |  | | que no me prenda? ¡Qué sueño |  | | tiene el mozo! ¿A ver el dueño? |  | | No le podrán dispertar | 335 | | el ruido de un cañón. |  | | Las armas de los cristianos |  | | son notables; si en mis manos |  | | su dorada guarnición |  | | viera yo contra los dos, | 340 | | y contra dos mil, y fuera |  | | remedio, presto te viera. |  | | ¡Ciego estoy, válgame Dios! |  | | Sacarle quiero la espada |  | | solo para ver su acero. | 345 | | Bella hoja; pero quiero |  | | vella de sangre esmaltada. |  | | Mal hago; mejor será |  | | apartarme a vella allí. |  | | ¿Tendrá cinco palmos? Sí, | 350 | | esos pienso que tendrá. |  | | Cortos los alfanjes son |  | | y no hieren de estocada. |  | | Esta es arma aventajada |  | | y estimada con razón. | 355 | | A reparar y a ofender |  | | puede servir desta suerte. |  | | Brazo quiere diestro y fuerte; |  | | de hoy más la quiero aprender. |  | | | | | | | |
|  | | | | | |
| *(Silbos dentro y grita; despierten los dos)* | | | | |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | UNO | |  |  | | --- | --- | | ¡Ataja! ¡Ataja! ¡Que el toro | 360 | | vuelve a las viñas! |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay, cielo! |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  | | --- | | ¡El toro! | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | UNO | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | ¡Ataja! | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | Recelo |  | | que quiere matarme el moro. |  | | ¿Qué es eso, Hamete? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Señor, |  | | pensé que el toro venía | 365 | | y defenderte quería, |  | | porque te he cobrado amor. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | No me sirvas de esa suerte |  | | ni me desarmes jamás. |  | | Y tú, bestia, ¿dónde estás, | 370 | | que estoy por matarte? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | Advierte. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué he de advertir, vive Dios? |  | | De darte una cuchillada. |  | | ¿Quitar me dejas la espada? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | PÁEZ | |  |  | | --- | --- | | Aquí estábamos los dos | 375 | | y por Dios que no le vi. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DON MARTÍN | |  |  | | --- | --- | | Dame la mula. Y tú, moro, |  | | ve delante. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | UNO | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | ¡Guarda el toro! |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué buena ocasión perdí! |  | | | | | | | |
|  | | | | | |
| *(Vanse, y en pasando la grita del toro, salgan GASPAR SUÁREZ y DOÑA LEONOR)* | | | | |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Prima y señora mía, | 380 | | a quien con tal primor compuso el cielo |  | | como al sol para el día |  | | y en las tinieblas del obscuro velo |  | | la luna y las estrellas, |  | |  | | | | | | —fol. 65r→ | | | |  | | aunque con mayor luz las vuestras bellas. | 385 |  |  |  | | ¿Cuál hombre más dichoso |  |  |  |  | | de cuantos hizo Dios hallar se puede |  |  |  |  | | que quien de vuestro esposo |  |  |  |  | | merece el nombre, pues, si alguno excede |  |  |  |  | | al que de primo tengo, | 390 |  |  |  | | es este de que hoy a honrarme vengo? |  |  |  |  | | Si en el humilde estado |  |  |  |  | | que puso a un pobre pastorcillo el suelo |  |  |  |  | | os tuviera a mi lado, |  |  |  |  | | al sol de julio y de diciembre al yelo | 395 |  |  |  | | tan contento me viera |  |  |  |  | | que poca envidia al Príncipe tuviera. |  |  |  |  | | No hay cosa en que el deseo, |  |  |  |  | | de cuantas piensa el pensamiento humano, |  |  |  |  | | y con sus ojos veo, | 400 |  |  |  | | halle comparación con vuestra mano. |  |  |  |  | | Quien tiene esta riqueza, |  |  |  |  | | dichoso le formó naturaleza. |  |  |  |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Los encarecimientos, |  | | hijos tal vez de un ánimo fingido, | 405 | | en vuestros pensamientos |  | | no dudo, primo, que de amor lo han sido. |  | | Mi amor quiere que os crea, |  | | aunque más gala que contento sea. |  | | Obligada me muestro, | 410 | | puesto que en estimarme, señor mío, |  | | estimáis lo que es vuestro, |  | | y que me habéis de hacer merced confío, |  | | pues estáis obligado |  | | por primo y por marido a este cuidado. | 415 | | Parece que, en naciendo, |  | | mis padres solo a vós me dedicaron, |  | | y que, apenas pudiendo |  | | formar la voz, cuando ellos me criaron |  | | vuestro nombre aprendía | 420 | | y desataba en él la lengua mía. |  | | Si hay letras en los ojos, |  | | como decía un sabio, pues en ellos |  | | los gustos, los enojos |  | | escribe el alma, y se conocen dellos | 425 | |  | | | | | | —fol. 65v→ | | | |  | | en los míos cualquiera, |  |  |  |  | | vuestro nombre sospecho que leyera. |  |  |  |  | | Para mayores muestras, |  |  |  |  | | si a sus niñas alguno preguntara, |  |  |  |  | | dijeran que eran vuestras, | 430 |  |  |  | | que fue gusto del cielo que en la cara |  |  |  |  | | dos esclavas tuviese, |  |  |  |  | | porque, en viéndome, el dueño se supiese. |  |  |  |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué puede el amor mío, |  | | Leonor querida, responder agora, | 435 | | sino algún desvarío? |  | | Mirad en qué tenéis gusto, señora, |  | | y mandad a quien creo |  | | que tiene esclavo en vós hasta el deseo. |  | | Ya suelen los amantes | 440 | | las blancas perlas de la mar espumas, |  | | los eternos diamantes, |  | | la fénix rara de purpúreas plumas, |  | | ofrecer a quien aman, |  | | fuerza de amor los imposibles llaman. | 445 | | No el ave del Arabia; |  | | diamantes sí, con que se casa el oro, |  | | que yo sé que se agravia, |  | | prometiendo imposibles, el decoro |  | | de un amor verdadero, | 450 | | que lo que puedo dar prometer quiero. |  | | Sedas, oro, diamantes... |  | | Pedid, mi bien, y si quien ama tiene |  | | riquezas semejantes, |  | | en menos que su gusto el vuestro ordene | 455 | | en que servir le pueda |  | | quien obligado de mandarle queda. |  | | Mirad si el claro Tajo |  | | queréis subir, aunque en batel pequeño, |  | | o sus peñas abajo | 460 | | seguir su curso, cuando olvido y sueño, |  | | caballos de la noche, |  | | saquen del Indio mar su negro coche. |  | | Mirad si en esas huertas, |  | | cuando el alba ceñida de alhelíes | 465 | | al sol abra las puertas |  | |  | | | | | | —fol. 66r→ | | | |  | | y él salga coronado de rubíes, |  |  |  |  | | queréis entre las flores |  |  |  |  | | oír las aves repitiendo amores. |  |  |  |  | | Veréis cómo, subido | 470 |  |  |  | | sobre las ruedas de su centro bajo |  |  |  |  | | en plata convertido, |  |  |  |  | | madejas de cristal devana el Tajo |  |  |  |  | | para tejer labores |  |  |  |  | | en las huertas de frutas y de flores. | 475 |  |  |  | | Veréis las aves mudas |  |  |  |  | | en los álamos altos escuchando |  |  |  |  | | las cantoras azudas, |  |  |  |  | | órganos destemplados imitando; |  |  |  |  | | veréis en su instrumento | 480 |  |  |  | | cantar las aguas y pararse el viento. |  |  |  |  | | Si la pesca se acuerda, |  |  |  |  | | por caña tomaréis de amor el arco |  |  |  |  | | y por sedal la cuerda. |  |  |  |  | | Yo seré el pez, mi pensamiento el barco | 485 |  |  |  | | donde los dos iremos, |  |  |  |  | | mis ojos ríos, mis cuidados remos. |  |  |  |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Yo no tengo más gusto |  | | que veros y adoraros, dulce esposo. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Haga, pues es tan justo, | 490 | | nuestras bodas el cielo generoso |  | | tan venturosas, prima, |  | | pues sola esta prisión la muerte lima. |  | | Que viviendo más años |  | | de los que suele dar naturaleza, | 495 | | y libre de los daños |  | | que siguen a la dicha y la riqueza |  | | con sucesión dichosa, |  | | os goce un siglo entero, dulce esposa. |  | | No pueda mal suceso, | 500 | | no golpe de fortuna, hacer de suerte |  | | que deje de estar preso, |  | | a despecho del tiempo y de la muerte, |  | | en la prisión que adoro. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  | | --- | | Vós solo sois mi bien. | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Vós mi tesoro. | 505 | | | | | | | |
|  | | | | | |
|  | | | | | |
| *(Sale RIBERA)* | | | | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | RIBERA | |  |  | | --- | --- | | Albricias me puedes dar. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | GASPAR | |  | | --- | | ¿De qué, Ribera? | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | RIBERA | |  |  | | --- | --- | | Hoy sospecho |  | | que acabará de llegar |  | | el caballo más bien hecho |  | | que hay desde el Tajo hasta el mar. | 510 | | No ha visto el Andalucía, |  | | perdónenlo a mi alegría |  | | las dehesas gamenosas, |  | | bestia con tantas graciosas |  | | artes. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Es ventura mía. | 515 | | Toma este anillo, y con tinta |  | | de tu buen gusto me pinta |  | | ese caballo. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | RIBERA | |  |  | | --- | --- | | Tus manos |  | | beso, honor de toledanos. |  | | Oye una cifra sucinta: | 520 | | el caballo es bayo oscuro, |  | | bebe con blanco y los cabos |  | | son negros; de frente es duro: |  | | de ojos rígidos y bravos, |  | | puesto que hidalgo y seguro; | 525 | | es enjuto de mejillas, |  | | alto de rostro y pequeño |  | | de orejas; de las rodillas |  | | firme, que bien puede el dueño |  | | probarle de entrambas sillas; | 530 | | con anchos lomos levanta |  | | mejor las manos; espanta |  | | con las narices abiertas; |  | | venas muestra descubiertas |  | | desde la cuja a la planta; | 535 | | algo sobre el vientre hinchados |  | | muestra los lados; el pecho |  | | por ancho iguala los lados; |  | | de pies pequeño y estrecho, |  | | y de cascos bien formados; | 540 | | tiene viveza española, |  | | una mancha blanca sola, |  | | cola y clin, que limpia, en fin, |  | | las rodillas con la clin |  | | y la tierra con la cola; | 545 | | es un clarín relinchando; |  | | de la vista, si se atufa, |  | | rayos de fuego arrojando, |  | | y la espuma, cuando bufa, |  | | a los que le están mirando; | 550 | | es arrogante de paso, |  | | limpio, igual, lustroso y raso; |  | | pero solo considera |  | | que, si con alas naciera, |  | | fuera el caballo Pegaso. | 555 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Parece que estoy en él, |  | | según le pintas. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | RIBERA | |  |  | | --- | --- | | No siento |  | | qué pueda decirte dél. |  | | Él tiene lindo contento; |  | | muy bien te hallarás con él. | 560 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Buen caballo, buena espada |  | | y buena mujer, decía |  | | un caballero. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | RIBERA | |  |  | | --- | --- | | Y me agrada. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Buena, Ribera, es la mía; |  | | bien puede ser estimada. | 565 | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | RIBERA | |  | | --- | | Pesiatal. | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Honraismevós. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | RIBERA | |  |  | | --- | --- | | Para en uno sois los dos. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Honra y hacienda es poder |  | | del mundo, mas la mujer |  | | buena es de mano de Dios. | 570 | | ¿Qué nombre le llamaremos |  | | al caballo? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | RIBERA | |  |  | | --- | --- | | Por lo vivo, |  | | ‘Truhán’ llamarle podremos. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Aunque es humilde y no altivo, |  | | alto ese nombre le demos. | 575 | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  | | --- | | No me agrada. | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Pues, Leonor, |  | | ¿habéis vós nombre mejor? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | No, pero dame molestia |  | | el ver que, ‘truhán’ y bestia, |  | | morirá de hambre, señor. | 580 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué discreto advertimiento |  | | no ha de ser bestia el ‘Truhán’? |  | | ¿Es caballo corpulento? |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | RIBERA | |  | | --- | | Sí, señor. | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Será ‘Roldán’ |  | | buen nombre. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | RIBERA | |  |  | | --- | --- | | Diome contento; | 585 | |  | | | | | | —fol. 67r→ | | | |  | | ese se llame. |  |  |  |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Y a mí |  | | me parece bien ansí. |  | | | | | | | |
|  | | | | | |
| *(Entra FRANCISCA, criada)* | | | | |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FRANCISCA | |  |  | | --- | --- | | El sastre ahora ha venido |  | | para probarte el vestido. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  | | --- | | ¿El blanco? | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FRANCISCA | |  |  | | --- | --- | | Señora, sí. | 590 | | Y también trujo el platero |  | | la cintura aderezada. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Probarme el vestido quiero. |  | | Adiós. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Adiós, prenda amada, |  | | bien de quien mi bien espero. | 595 | | ¿Hay contento como ver |  | | una gallarda mujer |  | | honrar una casa noble? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | RIBERA | |  |  | | --- | --- | | Con hijos tendrás al doble |  | | ese contento y placer. | 600 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Démelos Dios de Leonor |  | | para servirle, y sean tantos |  | | que me empobrezcan. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | RIBERA | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué amor! |  | | | | | | | |
|  | | | | | |
| *(Entran ANA, criada, y LAURENCIO)* | | | | |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | No hagas tantos espantos, |  | | Ana. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | Aquí está mi señor. | 605 | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Laurencio, bien seas venido. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | Tú mil veces bien hallado |  | | y bien casado. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Ya he sido |  | | bien hallado y bien casado. |  | | ¿Cómo por Málaga ha ido? | 610 | | ¿No viene acá tu señor? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | Pensó venir, y no pudo. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | GASPAR | |  | | --- | | ¿No hubo esclavo? | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | Y el mejor |  | | de Berbería. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | No dudo |  | | las partes de su valor, | 615 | | escogido de tal gusto. |  | | ¿Es hombre fuerte? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | Es robusto, |  | | trabado, moreno, bravo |  | | y muy galán, aunque esclavo. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | RIBERA | |  |  | | --- | --- | | Hoy te viene todo al justo. | 620 | | Ya el caballo y los demás |  | | que tienes tendrán quien tenga |  | | cuidado dellos. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | Si estás |  | | de gusto para que venga, |  | | iré por él. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Bien podrás. | 625 | | ¿De quién le compró? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | Traía |  | | este moro un caballero |  | | que de Valencia venía. |  | | Diole por menos dinero, |  | | aunque por más cobardía, | 630 | | de lo que allá le costó, |  | | y es que dice que le vio |  | | con una espada desnuda |  | | un día, y que tuvo duda |  | | si quiso matarle o no. | 635 | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¡Lindo miedo en caballero! |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | El moro realmente es fiero, |  | | no de rostro, mas de fuerza, |  | | que no hay hombre que le tuerza |  | | el brazo. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Ese esclavo quiero. | 640 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | Sobre la palma levanta |  | | un hombre; dos herraduras, |  | | como dos naipes quebranta. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | RIBERA | |  |  | | --- | --- | | ¿Tú tienes lo que procuras? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | Ana de verle se espanta. | 645 | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | GASPAR | |  | | --- | | Ve por él. | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | La carta dejo |  | | con la ropa. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Tiempo habrá. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay, señor! No te aconsejo |  | | que venga este moro acá. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Tendrame como un espejo | 650 | | los caballos este moro. |  | | Estímole a peso de oro, |  | | no puedo vivir sin él. |  | | Si es fuerte y sale fïel, |  | | vale, Ribera, un tesoro. | 655 | | | | | | | |
|  | | | | | |
| *(Entran HAMETE y LAURENCIO)* | | | | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | Entra y échate a sus pies. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | ¿Es este el señor? | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | Él es. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | GASPAR | |  | | --- | | ¡Bravo esclavo, por Dios! | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | RIBERA | |  |  | | --- | --- | | ¡Bravo! |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Aquí tienes a tu esclavo |  | | para que los pies le des. | 660 | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | GASPAR | |  | | --- | | ¿Cómo te llamas? | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Hamete. |  | | | | | | | |
|  | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué nación, que tu persona |  | | buen servicio me promete? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Galán soy de Meliona. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Serás por fuerza jinete. | 665 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Bien sé por dónde se bate |  | | con el agudo acicate |  | | con más gracia y perfeción. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Sirve bien, que la afición |  | | es la puerta del rescate. | 670 | | ¿Quién te cautivó? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Un don Juan |  | | del hábito de San Juan |  | | con las galeras de Malta. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | GASPAR | |  | | --- | | Eras cosario. | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | No es falta. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | GASPAR | |  | | --- | | ¿Y dónde? | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | A vista de Orán. | 675 | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | GASPAR | |  | | --- | | ¿Viste a Nápoles? | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Ya vi |  | | a Nápoles otra vez, |  | | señor, que cautivo fui, |  | | que soy pieza de ajedrez |  | | y ando de aquí para allí. | 680 | | Juega Fortuna conmigo; |  | | de las casas que ha mudado |  | | vengo a la tuya. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Un amigo, |  | | si tú eres bueno, has hallado. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | El tiempo doy por testigo. | 685 | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué señal tienes ahí? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Heridas son que en Orán |  | | de cristianos recebí, |  | | y estas que frescas están |  | | es que a tu puerta caí, | 690 | | que al ir a entrar tropecé |  | | y me quedé sin sentido; |  | | pero luego imaginé, |  | | pues a servirte he venido, |  | | que la posesión tomé. | 695 | | Ya tengo perdido el miedo |  | | que no tendré libertad: |  | | para siempre esclavo quedo. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Verás aquesta ciudad: |  | | bien te agradará Toledo. | 700 | | Entra y dale que meriende, |  | | Ana; y tú, Laurencio, toma |  | | este doblón. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | ¿Quién no emprende |  | | servirte? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¡Ah, crüel Mahoma! |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LAURENCIO | |  |  | | --- | --- | | Tú quedas con rico fende. | 705 | | No hay sino servir y ser |  | | fïel, que te vestirán |  | | que todos tengan que ver. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo vestirme podrán |  | | desnudo de tal placer? | 710 | | | | | | | |
|  | | | | | |
| *(Vanse todos, ecepto ANA y HAMETE)* | | | | |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ANA | |  | | --- | | Triste quedas. | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | No he quedado |  | | triste del dueño que tengo. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | Estuvieras engañado. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Estoy triste porque vengo |  | | de un alto a un humilde estado. | 715 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | Es mi señor tan galán, |  | | tan noble y tan virtuoso, |  | | que, aunque habrás visto en Orán |  | | su general generoso |  | | y los que con él están, | 720 | | no habrás tratado persona |  | | de valor y entendimiento |  | | como la suya. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Aficiona |  | | su talle, mis penas siento. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿Dejas algo en Meliona? | 725 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | No dejo sino en Valencia |  | | la mitad del alma agora. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | Menester habrás paciencia. |  | | ¿Quién es? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Una hermosa mora |  | | que ha hecho al Sol competencia. | 730 | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ANA | |  | | --- | | ¿Era tu mujer? | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Un mes |  | | estuvimos desposados. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | Mudanza del mundo es. |  | | Merienda; y de tus cuidados |  | | me darás parte después. | 735 | | ¿Comes tocino? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿Tocino? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | Si te quieres alegrar, |  | | bebe un traguillo de vino, |  | | que sola para llorar |  | | es buena el agua, imagino. | 740 | | | | | | | |
|  | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | A Mahoma tengo miedo. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | Si creyeras en el Credo, |  | | no le tuvieras. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Paciencia. |  | | Viva Argelina en Valencia |  | | y muera Hamete en Toledo. | 745 | | | | | | | |
|  | | | | | |
| *(Váyanse y entren CORCUERA y BELTRÁN, lacayos)* | | | | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Otra vez quiero abrazarte. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Bien lo debes a mi amor. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Deja, Beltrán, el temor |  | | y las desdichas aparte, |  | | que mejor tierra es aquesta. | 750 | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay, Corcuera! ¿Cómo puedo? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Pues, ¿no te alegra Toledo |  | | y el vernos andar de fiesta? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | El haber venido a él |  | | más por fuerza que por gusto | 755 | | me ha dado aqueste disgusto, |  | | aunque hay tanto gusto en él. |  | | Estaba, Corcuera hermano, |  | | vuestro servidor Beltrán |  | | con el famoso don Juan | 760 | | de Castelví valenciano, |  | | hombre de la cruz bautista |  | | y a fe gallardo soldado, |  | | y que pudiera a su lado |  | | perder mi oficio de vista. | 765 | | Porque, en fin, en las galeras |  | | seguí diversas derrotas |  | | en corso de galeotas |  | | y con sus blancas banderas, |  | | adonde por mi valor | 770 | | me prometió media cruz, |  | | con que, habiendo poca luz, |  | | fuera yo Comendador. |  | | Y quiso el diablo... |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué quiso? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ... que a Valencia me envió | 775 | | con dos esclavos, que yo |  | | fui carabela de aviso |  | | de una cierta doña Juana. |  | | Mandome el uno vender; |  | | vendile, y pudiera ser | 780 | | que mi condición liviana, |  | | no se ofreciendo ocasión, |  | | fuera en guardarle discreto |  | | el oro, pero, en efeto, |  | | la ocasión hace al ladrón. | 785 | | Con cien escudos pasaba |  | | la plaza de la Olivera, |  | | donde estaba una bandera |  | | y mi desventura estaba. |  | | Entré, vi jugar, jugué | 790 | | un escudo, perdí, y luego, |  | | picado, dije: «Otro juego». |  | | Perdí dos y otro saqué. |  | | Fuese con los dos, y al punto |  | | saco tres, pierdo los tres, | 795 | | venme el oro y meten pies |  | | como cuervos al difunto. |  | | Echo un azar, saco veinte, |  | | paro en un siete y llevar, |  | | y, tras aquel, echo azar. | 800 | | ¿Qué quieres más que te cuente? |  | | Jugué aquellos, y jugué |  | | los que llevaba el jubón, |  | | que era escritorio y cajón |  | | de lo que en Italia hurté. | 805 | | Como me vi sin el plus |  | | y que, si comer quería, |  | | había de andar cada día |  | | a la sopa de Jesús, |  | | no pude a Italia volver | 810 | | ni a la dama me atreví. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  | | --- | | ¿Es esa la historia? | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Sí. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Pues bien, ¿qué se puede hacer? |  | | Ya es perdido ese don Juan; |  | | quizá fue por vuestro bien, | 815 | | y en esta ciudad también |  | | mil don Juanes se hallarán. |  | | Por dicha en la guerra os dieran |  | |  | | | | | | —fol. 68v→ | | | |  | | tostones en colación |  |  |  |  | | destos que de plomo son | 820 |  |  |  | | o alguna burla os hicieron |  |  |  |  | | destas minas del abismo, |  |  |  |  | | que un hombre, en estando rota, |  |  |  |  | | salta como una pelota |  |  |  |  | | y se hace falta a sí mismo. | 825 |  |  |  | | Mejor es andar por llano, |  |  |  |  | | aunque no lo está Toledo; |  |  |  |  | | mas no hay de caer el miedo |  |  |  |  | | que haya por la guerra, hermano. |  |  |  |  | | Más vale aquí la ración | 830 |  |  |  | | de un grande de Jesucristo |  |  |  |  | | que cuantas pagas he visto |  |  |  |  | | en el mejor escuadrón. |  |  |  |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Pues, ¿qué grandes hay aquí? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Los canónigos son grandes | 835 | | desta iglesia, y no hay más Flandes |  | | que servirlos. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo ansí? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Una mula, y a sus horas; |  | | y a Dios, como al punto acuda. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | No hay en estrado viuda, | 840 | | perdónenme las señoras, |  | | como una mula con tocas. |  | | ¡Con qué seso está a la puerta |  | | de una iglesia! |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Es cosa cierta. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Y las visitas son pocas. | 845 | | Pero todo es día y vito, |  | | y esto de ver babear |  | | una mula, no hay pescar |  | | con caña ni con garlito |  | | que quiera más sufrimiento. | 850 | | Mejor vivo a lo seglar. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | De todo se puede hallar |  | | a quien servir a contento. |  | | El Corregidor tenía |  | | necesidad de un lacayo. | 855 | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  | | --- | | ¿Quién es? | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | ¡Oh, pesia a mi sayo, |  | | honor del Andalucía! |  | | Juan Gutiérrez Tello. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ¿Quién? |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  | | --- | | Tello el ‘Bravo’. | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Pesia tal. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Este no os estaba mal. | 860 | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Antes me estuviera bien. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Sin eso hay aquí señores |  | | Ayalos, Lasos, Riberas, |  | | Guzmanes, Toledos, Veras, |  | | Jurados y Regidores, | 865 | | y mercaderes que son |  | | gente noble y principal, |  | | indianos en el caudal, |  | | reyes en la condición. |  | | Es la gente de Toledo | 870 | | afable, discreta, honrosa, |  | | caritativa, piadosa... |  | | más que encarecerte puedo. |  | | Es para los forasteros |  | | liberal, y pues de bravo | 875 | | te picas, eso te alabo, |  | | porque hay famosos aceros. |  | | Sirve aquí, deja la Corte, |  | | que es Babilonia, Beltrán, |  | | y de una ración que dan | 880 | | se paga primero el porte. |  | | Aquí hay ventillas, y iremos |  | | a merendar ensalada, |  | | pie de puerco y empanada, |  | | de Burguillos beberemos. | 885 | | Y no faltarán dos sotas |  | | mejores que en Manzanares. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Quitado me has los pesares, |  | | el ánima me alborotas. |  | | Búscame un amo, aunque sea | 890 | | en un cigarral. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Querría |  | | acomodarte este día |  | | con quien te diese librea. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  | | --- | | ¿Hay casamiento? | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | No digo |  | | sino de toros y cañas. | 895 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Esos son telas de arañas |  | | y amapola en verde trigo. |  | | Sale un lacayo famoso |  | | con dos rejones al lado |  | | de un bayo rucio rodado | 900 | |  | | | | | | —fol. 69r→ | | | |  | | sonando el pretal lustroso. |  |  |  |  | | Lleva un coleto gentil |  |  |  |  | | de badana acuchillado, |  |  |  |  | | calza y jubón nacarado |  |  |  |  | | con velo blanco y sutil | 905 |  |  |  | | de plata de poca estima, |  |  |  |  | | que parece todo entero |  |  |  |  | | asadura de carnero |  |  |  |  | | con su tela por encima. |  |  |  |  | | Y cuando libra el pellejo | 910 |  |  |  | | y se acuesta muy cansado, |  |  |  |  | | halla el vestido arrugado |  |  |  |  | | que parece trapo viejo. |  |  |  |  | | Véndele por la mañana |  |  |  |  | | y da un ropante por él, | 915 |  |  |  | | por oro de cascabel, |  |  |  |  | | tres reales de mala gana. |  |  |  |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | En la iglesia entrado habemos. |  | | Esta es la famosa nave |  | | de san Cristóbal. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué grave | 920 | | gente! |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Aquí nos apartemos. |  | | En esta nave se embarca |  | | de Toledo la nobleza; |  | | cada día aquí se reza |  | | todo lo que el mundo abarca. | 925 | | Es como patio en palacio |  | | o cual gradas en Sevilla. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | La máquina maravilla. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Quiere ingenio y quiere espacio. |  | | | | | | | |
|  | | | | | |
| *(Entren GASPAR SUÁREZ, el HERMANO DE GASPAR y otros cuatro caballeros)* | | | | |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Ya digo que jugaré, | 930 | | aunque recién desposado. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CABALLERO 1º | |  |  | | --- | --- | | Mucho me habéis obligado. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HERMANO | |  |  | | --- | --- | | Y yo con mi hermano iré. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CABALLERO 2º | |  |  | | --- | --- | | Caballos no han de faltar. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Hoy me ha de llegar un bayo | 935 | | que puedo llamarle el ‘Rayo’. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CABALLERO 2º | |  |  | | --- | --- | | Bueno será para entrar. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CABALLERO 3º | |  |  | | --- | --- | | ¿Jugará el Corregidor? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HERMANO | |  |  | | --- | --- | | ¿Quién duda que jugará? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CABALLERO 4º | |  |  | | --- | --- | | Buenos caballos tendrá | 940 | | de la Corte. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¿Quién mejor? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CABALLERO 1º | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué librea sacaréis |  | | si, como el nombre, andáis franco? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Raso, azul, pajizo y blanco. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CABALLERO 2º | |  |  | | --- | --- | | Ninguna cosa tenéis | 945 | | de las que decís aquí |  | | en vuestra prima empleado, |  | | pues ni sois casto casado |  | | ni lo demás. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Es ansí. |  | | Pero son propias colores | 950 | | de mi Leonor. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CABALLERO 3º | |  |  | | --- | --- | | Lo leonado |  | | era del nombre. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Es cansado |  | | sin mucha plata, señores. |  | | Y aunque yo la pienso echar, |  | | menos con lo blanco obliga. | 955 | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CABALLERO 3º | |  |  | | --- | --- | | Su color don Pedro diga. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CABALLERO 1º | |  |  | | --- | --- | | Mi dueño me la ha de dar. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Llegaré por aquel lado |  | | y al que te digo hablaré, |  | | que ha puesto casa. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | No sé | 960 | | si, estando ya desposado, |  | | será acertado, Corcuera, |  | | que, acabados de casar, |  | | se retiran a horrar |  | | y anda la ración ligera. | 965 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Este es hombre principal |  | | y muy rico, y tan gallardo |  | | que, si te recibe, aguardo |  | | de su mano liberal |  | | gran remedio para ti. | 970 | | Dos palabras le quisiera |  | | a vuesa merced. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Afuera |  | | me podéis hablar, no aquí. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Es porque viera este mozo |  | | si dél hay necesidad. | 975 | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¿Conócenle en la ciudad? |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  | | --- | | Sí, señor. | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Salto de gozo. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Llevalde a casa después |  | |  | | | | | | —fol. 69v→ | | | |  | | que se van estos señores. |  |  |  |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HERMANO | |  |  | | --- | --- | | Reñir sobre las colores | 980 | | primer capítulo es |  | | del concierto de unas cañas. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | CABALLERO 1º | |  | | --- | | Vamos. | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CABALLERO 2º | |  |  | | --- | --- | | No quede por eso. |  | | Desconfianzas profeso; |  | | tengo esperanzas estrañas | 985 | | y es lo verde impropio en mí. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CABALLERO 3º | |  |  | | --- | --- | | Quiero daros mi color |  | | si la tenéis por mejor. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | CABALLERO 2º | |  | | --- | | Pues quede ansí. | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CABALLERO 3º | |  |  | | --- | --- | | Quede ansí. |  | | | | | | | |
|  | | | | | |
| *(Vanse)* | | | | |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Que le vaya a ver después, | 990 | | dijo. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Pues vamos los dos. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Si te acomodas por Dios, |  | | que de el cabello a los pies |  | | te enviste de terciopelo. |  | | Que tiene cien mil ducados. | 995 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Con seis hijos, y doblados |  | | los goce. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Ruégalo al cielo. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ¿Tienes adónde acudir? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Cierta pobreta me aguarda. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  | | --- | | ¿Qué gente? | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Estameña parda | 1000 | | acabada de tundir. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Mejor dirás ‘batanar’. |  | | ¿Hay hermana, prima o tía? |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  | | --- | | Hay madre. | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  | | --- | | Es vieja. | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Es arpía, |  | | mas puédete regalar. | 1005 | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  | | --- | | Habrá siete y seis. | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Añade. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  | | --- | | Dilo. | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  | | --- | | Unas. | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ¡Válame Dios! |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Y aun le quito más de dos, |  | | mas puede ser que te agrade. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  | | --- | | ¿Es sesenta? | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Punto menos. | 1010 | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Pues, ¿cómo me ha de agradar? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Porque un no pedir y un dar |  | | ha entretenido a mil buenos. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Materia es la carga. Camina. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | La esquina desta calleja | 1015 | | habita. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | No basta vieja |  | | sino vivir en esquina. |  | | Taberna parecerá. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  | | --- | | Verdad. | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  | | --- | | ¿Hay dos puertas? | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Sí, |  | | que unos entran por allí | 1020 | | y otros salen por allá. |  | | | | | | | |
|  | | | | | |
| *(Vanse, y entre HAMETE)* | | | | |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Penosa y mísera vida |  | | para los bienes ligera, |  | | pesada para los males, |  | | que allí paras y aquí vuelas. | 1025 | | ¿Qué he de hacer en tal desdicha |  | | viendo que ya no me queda |  | | remedio para librar |  | | el alma que está en Valencia? |  | | Dejadme, tristes memorias, | 1030 | | que la mayor de las penas |  | | no es perder las glorias, no, |  | | sino la memoria dellas. |  | | De todo quiero olvidarme, |  | | porque no es razón que venza | 1035 | | un corazón como el mío |  | | memorias flacas y tiernas. |  | | ¿Debajo de qué fortuna |  | | bajó conmigo la rueda? |  | | No fue tanta mi desdicha | 1040 | | como mi memoria piensa. |  | | No en galeras de cristianos |  | | con el remo y con la fuerza |  | | azoto el mar y me azota |  | | el duro cómitre en ellas. | 1045 | | No despierto al sonoroso |  | | pito ni al alba risueña; |  | | acudo almilla o capote, |  | | el bonete o la cadena. |  | | En buena ciudad estoy, | 1050 | | rica, ilustre, hermosa y bella; |  | | buen amo tengo y buena ama: |  | | amor notable me muestran; |  | | mozos son recién casados, |  | | pero la envidia me aqueja | 1055 | |  | | | | | | —fol. 70r→ | | | |  | | de ver que en su propio nido |  |  |  |  | | como palomas se besan. |  |  |  |  | | Él es discreto y galán, |  |  |  |  | | ella gallarda y discreta, |  |  |  |  | | sus crïadasvirtüosas | 1060 |  |  |  | | cuidan mi comida y cena. |  |  |  |  | | ¡Ay, sueño! Olvídame un poco |  |  |  |  | | de memorias lisonjeras; |  |  |  |  | | duerma un esclavo que, en fin, |  |  |  |  | | es libre en tanto que duerma. | 1065 |  |  |  | | | | | | | |
|  | | | | | |
| *(Recuéstase, y salgan DOÑA LEONOR y ANA)* | | | | |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Ana, mucho se ha tardado |  | | mi primo esta vez. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | No creas |  | | que ajeno gusto le ocupe. |  | | Si alguna malicia piensas, |  | | en la iglesia estará agora. | 1070 | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | ¿Agora estará en la iglesia? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | Sí, señora; y divertido, |  | | como es ocasión de fiestas. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Las fiestas de un desposado |  | | no las tengo yo por buenas | 1075 | | fuera de casa. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | Ni yo |  | | tengo por buenas tus quejas. |  | | Mi señor te está adorando. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Ana pagará la deuda |  | | que debe a mi grande amor. | 1080 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | *(Durmiendo)* | | Toda es desdichas la guerra. |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  | | --- | | ¿Quién habla aquí? | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay, Dios! No sé. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | El moro parece; llega |  | | y échale de aquí. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | Entre sueños |  | | habla. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Está un momento atenta | 1085 | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Para poderme librar |  | | ningún remedio me queda, |  | | si no es matar. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | ¿A quién dijo? |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ANA | |  | | --- | | No dijo a quién. | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¡Mueran, mueran...! |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué es esto, moro? ¿Con quién | 1090 | | hablas? |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | ¿Yo hablaba? | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Despierta, |  | | y otra vez no entres aquí. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Perdona. ¡Ay, querida tierra! |  | | Si pudiera conquistarte |  | | con mis suspiros, Valencia, | 1095 | | con los de un hora no más |  | | ya no tuvieras almena. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Vete a la caballeriza, |  | | moro, y nunca sin licencia |  | | a estos corredores subas. | 1100 | | Toda la sangre me altera. |  | | | | | | | |
|  | | | | | |
| *(Entra GASPAR SUÁREZ)* | | | | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¡Hola! Toma aquesta capa. |  | | | | | | | |
|  | | | | | |
| *(Criados se la quitan)* | | | | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Primo, bienvenido seas. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Quien viene a tus brazos, viene, |  | | prima, a un cielo de la tierra. | 1105 | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo te has tardado tanto? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Estos señores que juegan |  | | las cañas me han detenido, |  | | y que los juegue. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | No temas. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Me mandan por vida tuya, | 1110 | | y aun quise decir ‘me ruegan’, |  | | según me han importunado. |  | | Que mis fiestas, Leonor bella, |  | | son adorar esos ojos. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Mi vida, si tú te huelgas, | 1115 | | yo recibo mucho gusto. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¡Guárdete Dios! ¡Qué discreta! |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | ¿Escogiste las colores? |  | | | | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | GASPAR | |  | | --- | | Sí, mi señora. | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué llevas? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Azul, amarillo y blanco. | 1120 | | Escucha, no te entristezcas: |  | | lo azul significa el cielo, |  | | que comparo a tu belleza; |  | | lo amarillo, el sol que sale, |  | | y en tu verde edad comienza | 1125 | | a fertilizar el año, |  | |  | | | | | | —fol. 70v→ | | | |  | | que por muchos años sea; |  |  |  |  | | lo blanco es la fe, que tiene |  |  |  |  | | tal blancura la pureza |  |  |  |  | | con que mi alma te adora. | 1130 |  |  |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Bien obligada me dejas; |  | | y en tiempo que me encareces |  | | y que de verme te alegras, |  | | mercedes quiero pedirte. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | No agravies lo que desea | 1135 | | servirte un alma tan tuya. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | El moro no me contenta. |  | | ¿Qué has comprado? |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | No prosigas; |  | | luego al instante se venda. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Oíle ciertas palabras | 1140 | | durmiendo, y si cuando sueña |  | | habla de matar y herir, |  | | mejor lo hará si despierta. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Mañana a Madrid lo envío. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Temo, señor, que se atreva | 1145 | | a algún crïado de casa |  | | o alguna gente de fuera. |  | | Ya vino vuestro caballo. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Dadme, señora, licencia |  | | para verle. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Iré con vós, | 1150 | | porque yo también le vea. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¡Hola! Sáquenle a ese patio. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Creedme que es una perla. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Si vós le dais ese nombre, |  | | harele una caja. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Tenga | 1155 | | este solo por mi vida. |  | | | | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Más que la naturaleza |  | | habéis hecho, mi señora: |  | | que naturaleza engendra |  | | perlas en nácar, y vós | 1160 | | hacéis de las bestias perlas. |  | | | | | | | |
| **Acto III** | | |
|  | | |
| *Salen BELTRÁN y CORCUERA* | |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué buen agradecimiento |  | | de haberos acomodado! |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | He andado muy ocupado |  | | y solo al servicio atento |  | | que vós sabéis que merece | 5 | | Gaspar Suárez, mi señor, |  | | cuya virtud y valor |  | | hoy como el sol resplandece. |  | | Fuera desto, habéis estado |  | | en la aldea y yo en Madrid. | 10 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | A qué fuistes me decid, |  | | que ya os tengo disculpado. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Fue por caballos mi amo |  | | y volvió a traer de allá |  | | aquel Hamete a quien ya | 15 | | por todo estremo desamo, |  | | que le quería vender |  | | por gusto de mi señora. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Bien ha hecho, porque agora |  | | pienso que le ha menester. | 20 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Hallole ya puesto en venta |  | | y el moro se enterneció |  | | de verle. Al fin le obligó |  | | a volverle. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | ¿Está contenta |  | | vuestra señora con él? | 25 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | No mucho, porque el esclavo |  | | es muy arrogante y bravo, |  | | aunque seguro y fïel. |  | |  | | | | | | —fol. 71r→ | | | |  | | Pero debe de fundarse |  |  |  |  | | en que es caballero. |  |  |  |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Todos | 30 | | los esclavos se hacen godos. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Este bien puede estimarse, |  | | que yo me hallé con don Juan |  | | el día que le prendió |  | | y sé el valor que mostró. | 35 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Luego, ¿aqueste fue, Beltrán, |  | | el que en Valencia vendistes? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Este fue aquel que jugué, |  | | cuyo dinero se fue |  | | de la manera que vistes. | 40 | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | ¿Y está el moro bien con vós? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Yo a lo menos estoy mal |  | | con él. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Eso es natural: |  | | sois elementos los dos. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Es un perrazo arrogante | 45 | | a quien dan algunos días |  | | tan fieras melancolías |  | | que no hay ponerse delante. |  | | En lo demás, si por dicha |  | | algún día está contento, | 50 | | muestra buen entendimiento. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Dichosa fue su desdicha |  | | si por aqueste camino |  | | viene a conocer a Dios. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  | | --- | | ¿Y cómo? | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | ¿Reñís los dos? | 55 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Sí, mas no sobre el tocino, |  | | como los perros y gatos. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Ya es tarde y querrá cenar |  | | mi señor. Dame lugar. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Acá ya suenan los platos. | 60 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Pues entrad, y por mi vida |  | | que os dejéis ver. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Vós veréis |  | | la enmienda. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Entre siete y seis, |  | | Beltrán, mañana os convida |  | | a lo del santo Corcuera | 65 | | junto a la plaza Mayor. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Allá voy como un azor; |  | | mas sea la fiesta entera |  | | y despertemos el vino. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Tocino lo habrá de hacer. | 70 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ‘Alcahuete del beber’ |  | | llamó un flamenco al tocino. |  | | | | |
|  | | |
| *(Éntrense, y salen GASPAR SUÁREZ y DOÑA LEONOR)* | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Pienso que os habréis holgado. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Nunca me huelgo sin vós. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Que os lo pago, sabe Dios, | 75 | | prima, en el mismo cuidado. |  | | ¿Qué dijeron del vestido |  | | esas señoras? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Que fue |  | | de vuestro gusto. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | No sé, |  | | prima, si del vuestro ha sido. | 80 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | La cadena de diamantes |  | | les agradó. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Yo quisiera |  | | que toda de estrellas fuera |  | | al mismo sol semejantes. |  | | Desea mi justo amor | 85 | | serviros en cuanto puede, |  | | y es fuerza que atrás se quede |  | | por no igualar su valor, |  | | que si con él se midieran |  | | las fuerzas, no hay India agora | 90 | | para serviros, señora: |  | | pobres sus riquezas fueran. |  | | Oro pisaran los pies |  | | que pueden pisar mis ojos, |  | | donde el amor sin despojos | 95 | | confiesa que no lo es; |  | | cuanto produce la aurora |  | | de ricas piedras vistiera |  | | de esa alma la rica esfera |  | | que es vuestro cuerpo, señora. | 100 | | Si naturaleza rara, |  | | segundas perlas hiciera |  | | de Cleopatra, y menos fuera |  | | de sus milagros avara; |  | | de cada sutil cabello | 105 | | una colgara, por Dios. |  | |  | | | | | | —fol. 71v→ | | | |  | | Pero hizo solas dos |  |  |  |  | | porque no pudiese hacello. |  |  |  |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Tantas mercedes me hacéis, |  | | tantos regalos me dais, | 110 | | que pienso que conquistáis, |  | | Gaspar, lo que ya tenéis. |  | | Mirad que lo que es tan vuestro |  | | no se ha de tratar ansí, |  | | que sospecharán de mí | 115 | | que menos amor os muestro. |  | | Y creed que me ganáis |  | | en mercedes que me hacéis |  | | porque, como hombre, podéis, |  | | y porque obligado estáis. | 120 | | Pero en amor no es posible. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¿Cómo no, si os quiero tanto? |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | ¿Queréis que os diga yo cuánto? |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | GASPAR | |  | | --- | | Sí. | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Oíd este imposible: |  | | Si el mundo todo en mi poder tuviera, | 125 | | por rey del mundo, primo, os coronara; |  | | y si pudiera hacer mundos, formara |  | | otros mil mundos que a esos pies pusiera. |  | | Si el cielo dilatarme concediera |  | | las vidas de los hombres, dilatara | 130 | | la vuestra tanto que hasta el fin llegara |  | | del fin universal que el mundo espera. |  | | Y si de Ovidio el artificio estraño |  | | se estendiera a sucesos verdaderos |  | | y su transformación no fuera engaño, | 135 | | me convirtiera en vós para teneros |  | | el amor que os tenéis. Si no me engaño, |  | | yo os quiero más que vós podéis quereros. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Agradezco la merced |  | | que me habéis hecho, Leonor; | 140 | | pero que igualéis mi amor |  | | por imposible tened. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Yo lo tengo por posible. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | GASPAR | |  | | --- | | Eso no. | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | De vós me espanto. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¿Queréis que os diga yo cuánto? | 145 | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  | | --- | | Sí. | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Oíd este imposible: |  | | Si fuera yo la juventud florida, |  | | en vuestra verde edad me aposentara, |  | | y si fuera yo el tiempo, me parara |  | | para que fuera eterna vuestra vida. | 150 | | Si fuera el sol la luz esclarecida |  | | de vuestros ojos, por mi luz tomara |  | | para que el mundo, en viéndola, os llamara, |  | | sola del sol de tanta luz vestida. |  | | Si no hubiérades sido, para hacerme | 155 | | un ser de vuestro ser a pensar vengo |  | | que, a poder ser que lo que no es se vea, |  | |  | | | | | | —fol. 72r→ | | | |  | | no quisiera haber sido por no verme |  |  |  |  | | con ser sin vós, porque este ser que tengo |  |  |  |  | | es ser por vós hasta que ser no sea. | 160 |  |  |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Venciome el entendimiento, |  | | no el amor. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Amor, señora, |  | | es mi entendimiento agora |  | | y alma de mi pensamiento. |  | | No tenéis que porfiar; | 165 | | siempre mi amor es mayor. |  | | | | |
|  | | |
| *(Entra ANA)* | |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | Ya si quiere mi señor, |  | | señora, puede cenar. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  | | --- | | ¿Está a punto? | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | Sí, señora. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  | | --- | | Entrad, mi bien. | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Voy con vós. | 170 | | ¿Qué es eso? |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | ¡Válgame Dios! |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Buen galán he sido agora. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Descorchóseme el chapín. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | GASPAR | |  | | --- | | ¿Hicístesos mal? | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | No es nada. |  | | | | |
|  | | |
|  | |  |
|  | | |
| *(Vanse, y entre HAMETE, y quede ANA)* | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Ana, ¿en qué estás ocupada? | 175 | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | ¿Por qué lo dice el mastín? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Para como vengo yo, |  | | ¿es esa respuesta buena? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | Hamete, mi señor cena. |  | | ¿Quieres otra cosa? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | No. | 180 | | Pero vive Dios que tienes |  | | un desabrimiento en ti. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | Pues bien, ¿qué quieres de mí? |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | ¿Qué he de querer? | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | Bueno vienes. |  | | Como no tienes costumbre, | 185 | | yo apostaré que algún trago |  | | ha hecho en ti más estrago |  | | que en Beltranillo una azumbre. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | ¡Vive Dios! | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | Perro, ¿tú a mí |  | | la mano alzada? ¡Pues calla! | 190 | | *(Vase)* |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | No sabe esta que me halla |  | | como en mi vida me vi. |  | | Anda desde anoche en mí |  | | una batalla tan fiera |  | | que parece que me altera | 195 | | todos los cinco sentidos |  | | de ver al alma ofendidos |  | | donde libertad no espera. |  | | Grande tristeza me ha dado |  | | tu carta, hermosa Argelina, | 200 | | pues ya tu amor imagina |  | | que de ti vivo olvidado; |  | | yo te escribiré el estado |  | | en que está tu pobre Hamete: |  | | piénsasme en Orán jinete, | 205 | | piénsasme en la mar delfín. |  | | ¡Ay, que no sabes el fin |  | | que esta prisión me promete! |  | | ¡Qué fiera melancolía! |  | | ¡Ay, mi patria! ¡Ay, cielo santo! | 210 | | Ojos ha bañado el llanto |  | | que el mismo fuego solía. |  | | Eterna tristeza mía, |  | | ¿qué tienes hoy más que ayer? |  | | De mi amo y su mujer | 215 | | creo que nace esta rabia, |  | | no porque nadie me agravia, |  | | pero por verlos querer. |  | | | | |
|  | | |
| *(Entra BELTRÁN)* | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Pues, Hamete, ¿cómo va? |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | No estoy para burlas. | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ¿No? | 220 | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | No, digo. | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Pues quiero yo... |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¡Déjame! ¡Quítate allá! |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ¿Hate mordido algún perro? |  | | Entra, que te quiere dar |  | | Figueroa de cenar. | 225 | | | | |
|  | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | Déjame. | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | No atarte es yerro. |  | | *(Éntrese HAMETE)* |  | | ¿Qué diablos tiene este galgo |  | | que hoy nos pone a todos miedo? |  | | | | |
|  | | |
| *(Entra un PAJECILLO)* | |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | PAJECILLO | |  | | --- | | Beltrán... | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  | | --- | | ¿Qué hay, niño? | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PAJECILLO | |  |  | | --- | --- | | Oye quedo. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Ya entiendo. Que luego salgo, | 230 | | en cenando mi señor. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PAJECILLO | |  |  | | --- | --- | | Mira que parece honrada. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  | | --- | | ¿Viene tapada? | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PAJECILLO | |  |  | | --- | --- | | Tapada. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  | | --- | | ¿Buena ropa? | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PAJECILLO | |  |  | | --- | --- | | Y buen olor. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Alguna que habrá caído | 235 | | en el talle de Beltrán, |  | | destas pobretas que van |  | | a la sopa de Cupido. |  | | Si preguntaren por mí, |  | | di que a la esquina llegué. | 240 | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PAJECILLO | |  |  | | --- | --- | | Vete, que yo lo diré. |  | | | | |
|  | | |
| *(Vase BELTRÁN)* | |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | Pues, ¿tú me tratas ansí? |  | | ¿La cena que está en la mesa |  | | me arrebatas? |  | | | | |
|  | | |
| *(Sale HAMETE con un plato comiendo)* | |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Pues, ¿qué quieres? |  | | El diablo son las mujeres. | 245 | | De que no le di me pesa |  | | con el plato, ¡vive Dios! |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | GASPAR | |  | | --- | | Ana, ¿qué es eso? | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | Este moro, |  | | que anda bravo como un toro. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¿Por qué le dejáis las dos | 250 | | que suba arriba? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | La cena |  | | me ha tomado. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Espera un poco. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | ¿Adónde vais? ¿Estáis loco? |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | PAJECILLO | |  | | --- | | Hamete... | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | ¿Qué? | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | PAJECILLO | |  |  | | --- | --- | | Tengo pena |  | | que señor te quiere dar. | 255 | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Lleva este plato allá dentro. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | PAJECILLO | |  | | --- | | Muestra. | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | Vete pues. | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PAJECILLO | |  |  | | --- | --- | | Ya entro. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | ¿Qué haré? | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PAJECILLO | |  |  | | --- | --- | | Limpiarte y negar. |  | | | | |
|  | | |
| *(Entra GASPAR SUÁREZ con una caña)* | |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Perro, ¿de cuándo acá sois atrevido? |  | | ¿Para eso os truje de Madrid, bellaco? | 260 | | ¡Cuán mejor estuviérades vendido! |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | Señor... | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Con humildades no me aplaco. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿Palos, cristiano, a un hombre bien nacido? |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Pues vive Dios que si la espada saco... |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Pluguiera a Dios que cuatro cuchilladas | 265 | | dejaran esta cara y barba honradas. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | GASPAR | |  | | --- | | ¿Palos siente un esclavo? | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¡Basta! ¡Tente! |  | | | | |
|  | | |
| *(Sale DOÑA LEONOR)* | |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  | | --- | | ¡Jesús, y qué disgusto! | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay, cielo airado! |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¡Perro, bellaco, bárbaro insolente! |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | ¡Dejalde! ¡Buena cena me habéis dado! | 270 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | En sufriendo a un esclavo impertinente, |  | | por momentos será desvergonzado. |  | |  | | | | | | —fol. 73r→ | | | |  | | Yo os haré que sepáis que las crïadas |  |  |  |  | | han de ser en mi casa respetadas. |  |  |  |  | | ¡Vós, tomalles la cena de la mesa! | 275 |  |  |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | ¡Basta, señor! ¡Entraos, por vida mía! |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | GASPAR | |  | | --- | | ¡La desvergüenza del perrazo...! | | | | |
|  | | |
| *(Éntranse los dos)* | |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Hoy cesa |  | | la vida, la esperanza y la porfía. |  | | Hoy me levanto a la mayor empresa, |  | | ya que la rabia del furor me guía, | 280 | | que ha cabido en esclavo eternamente, |  | | pues he sufrido que Gaspar me afrente. |  | | ¿Palos a mí, que general he sido? |  | | ¿Palos a mí, galán de Meliona? |  | | ¿Palos a mí, que tantos he vencido | 285 | | en los campos de Orán por mi persona? |  | | ¿Al bárbaro más noble y bien nacido |  | | de cuantos hoy el África corona? |  | | ¿Palos con una caña, y en España, |  | | donde es mayor la infamia con la caña? | 290 | | ¿Qué guardo yo la vida, si en Toledo, |  | | tan lejos de mi patria, pobre esclavo, |  | | la tengo de acabar? Afuera miedo, |  | | pues la desdicha con la vida acabo: |  | | con un cuchillo remediallo puedo; | 295 | | vitupero el vivir, la muerte alabo, |  | | blasfemo de Mahoma. ¿A mí de palos? |  | | Los buenos con agravios se hacen malos. |  | | *(Vase)* |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | ¿Adónde vas de esa suerte? |  | | ¿Estás loco, moro infame? | 300 | | ¡Señor! ¡Señor! |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Figueroa, |  | | ¿qué es eso? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | Este perro alarbe, |  | | que de aquí tomó un cuchillo. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¡Beltrán! ¡Hola, Enrique! ¡Pajes! |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | Ninguno está aquí, señor. | 305 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¿Déjanme cenando y vanse? |  | | ¡Dadme unas esposas! ¡Presto! |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Señor, importa que llames |  | | algún hombre que te ayude. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Corriendo salgo a la calle. | 310 | | *(Sale)* |  | | ¡Señor Capitán Guevara! |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | CAPITÁN | |  | | --- | | ¿Quién es? | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Yo soy: Gaspar Suárez. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CAPITÁN | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué quiere vuesa merced? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Mande que al instante bajen, |  | | vuesa merced, dos crïados | 315 | | para que me tengan y aten |  | | este moro. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CAPITÁN | |  |  | | --- | --- | | Iré yo mismo. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Quiero entrar y amenazarle |  | | que, si contra mí se vuelve, |  | | vive el cielo que le pase. | 320 | | ¿Agora cerráis la puerta? |  | | ¡Mas si es él! ¡Hamete, abre! |  | |  | | | | | | —fol. 73v→ | | | |  | | ¡Abre, Hamete! ¡Hola, Francisca, |  |  |  |  | | Ana, Luis...! ¿No me oye nadie? |  |  |  |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | Yo mataré lo que adoras, | 325 | | cristiano, para vengarme. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay, Hamete! ¿A mí por qué? |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¡Oh, perro traidor! ¿Qué haces? |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | ¡Jesús! ¡Virgen del Sagrario! |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | GASPAR | |  | | --- | | Leonor se queja. | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | ¡Que trates | 330 | | desta suerte a mi señora...! |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¡Que no hay un hombre que pase |  | | que me ayudara a romper |  | | esta puerta...! ¿Eres diamante, |  | | duro cerrojo? |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ANA | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay de mí! | 335 | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FRANCISCA | |  |  | | --- | --- | | ¿A mi hija, perro infame? |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | Muere tú también. | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FRANCISCA | |  |  | | --- | --- | | ¡Jesús! |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¡Oh, puertas inexorables! |  | | ¡Hijo Hamete! ¡Hamete, hijo! |  | | Yo soy tu señor, tu padre, | 340 | | tu amigo, tu hermano... ¡Tente! |  | | | | |
|  | | |
| *(Salen el CAPITÁN y gente)* | |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | CAPITÁN | |  | | --- | | ¿Qué es esto? | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Desdicha grande. |  | | Rempujad todos las puertas |  | | y entre todos abriranse, |  | | que no son yerba del pito | 345 | | mis lágrimas miserables. |  | | | | |
|  | | |
| *(Ábrense las puertas del teatro y, en abriéndolas, entre todos se vea DOÑA LEONOR dada de puñaladas)* | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CAPITÁN | |  |  | | --- | --- | | ¡Jesús, qué triste tragedia! |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¡Mi Leonor llena de sangre! |  | | ¡Si la ha muerto! Entrad, señores, |  | | a buscarle y a matarle. | 350 | | Leonor mía, ¿tienes vida? |  | | Esposa, ¿puedes hablarme? |  | | ¡Prima mía, amores míos...! |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  | | --- | | ¡Gaspar de mis ojos! | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¡Ángel! |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | DOÑA LEONOR | |  |  | | --- | --- | | Dame el abrazo postrero. | 355 | | ¡Jesús! |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Espiró. ¡Que acabe |  | | tan presto el cielo tu vida...! |  | | Detente, espíritu amable, |  | | o troquemos y entra en mí |  | | para que mi vida falte | 360 | | y entre mi alma en tu cuerpo, |  | | o mejor es que me mates. |  | | Vida mía, ¿no respondes, |  | | prima mía? |  | | | | |
|  | | |
| *(Sale el CAPITÁN)* | |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CAPITÁN | |  |  | | --- | --- | | Que saltase |  | | por unas tapias tan altas... | 365 | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | GASPAR | |  | | --- | | ¿Fuese? | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CAPITÁN | |  |  | | --- | --- | | O se ha muerto en la calle. |  | | Mas, ¿qué hay de doña Leonor? |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | GASPAR | |  | | --- | | Que es muerta. | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CAPITÁN | |  |  | | --- | --- | | ¡Caso notable! |  | | También lo están dos crïadas; |  | | pienso que son hija y madre. | 370 | | Los demás se han escondido. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Todo el mundo ha de culparme |  | | por no haber muerto este moro. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CAPITÁN | |  |  | | --- | --- | | Toda la ciudad se arde. |  | | ¡Cerrad las puertas! |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay, triste! | 375 | | | | |
|  | | |
| *(Cierren las puertas y salga BELTRÁN)* | |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | En casa siento quejarse, |  | | y parece que dan voces. |  | | | | |
|  | | |
| *(Entra HAMETE con un cuchillo y un palo)* | |  |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Al río quiero arrojarme |  | | y esconderme entre los montes. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  | | --- | | ¿Quién es? | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | Apártese. | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Aguarde. | 380 | | ¿Es Hamete? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | El mismo soy, |  | | y tome porque se aparte. |  | | | | |
|  | | |
| *(Vase HAMETE. Salen el CORREGIDOR y ALGUACILES y gente)* | |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  | | --- | | ¡Ay, que me han muerto! | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ALGUACIL | |  |  | | --- | --- | | Aquí hay gente. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Pasen las hachas delante. |  | | ¡Jesús! ¿Doña Leonor muerta? | 385 | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ALGUACIL | |  | | --- | | ¡Tente al Rey! | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Ya llegan tarde. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿Has encontrado, por dicha, |  | | a Hamete, el de Gaspar Suárez? |  | | | | |
|  | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Él ha encontrado comigo. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | TELLO | |  | | --- | | ¿Hiriote? | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ¿No ven la sangre? | 390 | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ALGUACIL | |  |  | | --- | --- | | Este es crïado de casa. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¡Caminen! No dejen calle |  | | en toda Toledo. Tú |  | | entra comigo a curarte. |  | | Y en aquesta información | 395 | | dirás también lo que sabes, |  | | si viste a Hamete matar |  | | a doña Leonor. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ¡Oh, infame! |  | | ¿A doña Leonor ha muerto? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¡Oh, plega a Dios que le alcancen! | 400 | | Dese un pregón por Toledo; |  | | porque no le encubra nadie, |  | | pena de muerte. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Fïad |  | | de bárbaros. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Dios me guarde. |  | | | | |
|  | | |
| *(Vanse, y sale HAMETE todo mojado)* | |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Aunque vestido, he pasado, | 405 | | Tajo, tu veloz corriente |  | | templando mi fuego ardiente |  | | en tu cristal sosegado. |  | | Ya de mis palos vengado |  | | salgo honrado a tu ribera. | 410 | | ¡Ojalá que muerto hubiera |  | | a quien los palos me dio! |  | | Aunque presumo que yo |  | | tomé venganza más fiera: |  | | si puede un hombre matar | 415 | | el alma de que le agravia, |  | | yo vengué mejor mi rabia |  | | de lo que pude pensar. |  | | No maté el cuerpo a Gaspar, |  | | pero el alma le maté. | 420 | | Luego más venganza fue, |  | | pues, matándole a Leonor, |  | | puedo decir en rigor |  | | que hasta el alma le saqué. |  | | ¿Adónde irá este camino? | 425 | | Bueno será desviarme |  | | y por las peñas entrarme; |  | | lo más seguro imagino. |  | | Gente hay en este molino; |  | | también nadan más abajo. | 430 | | Por aquí voy con trabajo, |  | | ¡quién se convirtiera en ave! |  | | No fuera esta barca nave |  | | y el mar de Valencia el Tajo... |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | NADADOR | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | San Juan y la Madalena, | 435 | | y ya va. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Que sin congoja |  | | aquel nadador se arroja |  | | y el agua rompida suena. |  | | ¿Si pasaré desta arena...? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | NADADOR | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | ¿Queréis que haga el barquete? | 440 | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿Por adónde irás, Hamete? |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | NADADOR | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | ¡Que me ahogo! | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay! ¡Si yo fuera, |  | | qué descansado estuviera |  | | del mal que Alá me promete! |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MOLINERO | |  | | --- | | *(Canten dentro)* | | Molinico, ¿por qué no mueles? | 445 | | Porque me beben el agua los bueyes. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Cantando está el molinero. |  | | Quiero ver si tiene espada. |  | | | | |
|  | | |
| *(Sale el MOLINERO)* | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MOLINERO | |  |  | | --- | --- | | ¡Qué noche tan sosegada! |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Buenas noches, molinero. | 450 | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MOLINERO | |  | | --- | | ¿Quién es? | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Soy un caballero. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MOLINERO | |  |  | | --- | --- | | ¿En campo negro o en blanco? |  | | Pues si aquella estaca arranco, |  | | de la cabeza a los pies |  | | le diré presto si es | 455 | | el moro de Gaspar Franco. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | Conócesme. | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MOLINERO | |  |  | | --- | --- | | Luego no. |  | | ¿Qué has hecho, perrazo, allá |  | | que ansí te vienes acá? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | *(Aparte)* | | Aqueste me conoció, | 460 | | y si aquí le dejo yo, |  | | dirá que me ha visto aquí. |  | | Esto se ha de hacer ansí. |  | |  | | | | | | —fol. 74v→ | | | |  | | ¡Muere, perro! |  |  |  |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MOLINERO | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay, que me ha muerto! |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Agora estaré más cierto | 465 | | que no dirás «yo le vi». |  | | Mal voy por este camino; |  | | Madrid en su Corte encierra |  | | seis esclavos de mi tierra: |  | | que acierto en ir imagino. | 470 | | Ya se alborota el molino. |  | | Ellos podrán esconderme |  | | y de allí en salvo ponerme. |  | | Alá, socorre mi vida, |  | | que, según de mí se olvida, | 475 | | pienso que Mahoma duerme. |  | |  |  | | | | |
|  | | |
| *(Vase, y entran GIL y BARTOLO, villanos)* | |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BARTOLO | |  |  | | --- | --- | | Echa ese cañada abajo, |  | | Gil, que comienza el albor. |  | | Por acá el arroyo atajo. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GIL | |  |  | | --- | --- | | Este oficio de pastor | 480 | | es temerario trabajo. |  | | Agora está el cortesano |  | | durmiendo en cama de seda, |  | | y acá el mísero villano |  | | sacando desta arboleda | 485 | | las ovejuelas al llano. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BARTOLO | |  |  | | --- | --- | | Yo precio más ver reír |  | | el alba por estas flores |  | | y al claro viento bullir |  | | entre sus varias colores, | 490 | | perla, granate y safir, |  | | que toda su seda y oro. |  | | ¿Dónde iba aquel correo |  | | que os habló? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GIL | |  |  | | --- | --- | | Buscando un moro |  | | por el delito más feo | 495 | | que ha bañado en luto y lloro |  | | pueblo, villa ni ciudad. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BARTOLO | |  | | --- | | ¿Fue en Toledo? | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GIL | |  |  | | --- | --- | | Nunca arrasa |  | | la súbita tempestad |  | | el campo como él su casa. | 500 | | Las piedras mueve a piedad. |  | | Mató su ama y mató |  | | las crïadas; solamente |  | | lo que no vio perdonó. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BARTOLO | |  | | --- | | ¿Cómo se huyó? | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GIL | |  |  | | --- | --- | | La corriente | 505 | | del Tajo a nado pasó |  | | y en los montes escondido |  | | piensan algunos que está, |  | | y otros que a Madrid es ido. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BARTOLO | |  |  | | --- | --- | | Gran gente en su busca irá. | 510 | | | | |
|  | | |
| *(Entra HAMETE)* | |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Mejor acuerdo he tenido, |  | | porque nadie ha de pensar |  | | que en Madrid me atrevo a entrar. |  | | Fuera de camino voy, |  | | pero yo pienso que estoy | 515 | | no lejos de algún lugar. |  | | Dos villanos hay allí. |  | | ¡Ah, buena gente! |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BARTOLO | |  |  | | --- | --- | | ¿Quién es? |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿Vase a Madrid por aquí? |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GIL | |  |  | | --- | --- | | Errados lleváis los pies. | 520 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | 'Errados' dijo, ¡ay, de mí!; |  | | sin duda me conoció. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GIL | |  |  | | --- | --- | | Echad sobre man derecha, |  | | por donde aquel perro echó. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | 'Perro' dijo; mi sospecha | 525 | | el labrador confirmó. |  | | ¿Cómo los podré matar? |  | | ¿Tenéis algo que me dar, |  | | que camino desde ayer |  | | sin parar y sin comer? | 530 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GIL | |  |  | | --- | --- | | ¿Mandele yo caminar? |  | | Váyase a espulgar un galgo. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | 'Galgo' me llamó, ¿qué dudo? |  | | De rabia de seso salgo. |  | | ¿Tratar un villano pudo | 535 | | desta suerte un moro hidalgo? |  | | Acercarme quiero más. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GIL | |  |  | | --- | --- | | Hombre, repara en que vas |  | | fuera de camino. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿Y tú |  | | dónde irás muerto? |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GIL | |  |  | | --- | --- | | ¡Jesús! | 540 | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BARTOLO | |  |  | | --- | --- | | ¡Oh, traidor! ¿Por qué le das? |  | | | | |
|  | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Aguárdame tú también. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | BARTOLO | |  | | --- | | ¿Cómo aguardar? | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¡Oye, espera! |  | | Por Alá que le di bien: |  | | cayó a tres pasos. Quisiera | 545 | | ver ansí cuantos me ven. |  | | ¡Espera, villano, un poco! |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BARTOLO | |  |  | | --- | --- | | ¡Ah de la villa! ¡Justicia, |  | | que ha dado a Gil muerte un loco! |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Vengarse el alma codicia | 550 | | cuando mis agravios toco. |  | | Palos a mil, ¡vive Alá!, |  | | que han de costar dos mil vidas. |  | | Este a su lugar se va, |  | | estotro con sus heridas | 555 | | pidiendo venganza está. |  | | Quiero atravesar la tierra |  | | para que no den conmigo. |  | | Hoy verás, canalla perra, |  | | cómo la maldad castigo | 560 | | que tu infame pecho encierra. |  | | A las honras ofendidas |  | | da la ocasión mil cabellos, |  | | que primero que lo impidas |  | | no ha de haber palo de aquellos | 565 | | que no cueste treinta vidas; |  | | pues, si me acierto a escapar |  | | y una vez entro en el mar |  | | como por la cava, España |  | | se ha de perder por la caña | 570 | | con que me afrentó Gaspar. |  | | | | |
|  | | |
| *(Vase, y entren una MESONERA, villana y LUCÍA)* | |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MESONERA | |  | | --- | | ¡Hola! ¿Muchacha? | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LUCÍA | |  |  | | --- | --- | | ¿Señora? |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MESONERA | |  |  | | --- | --- | | ¿Tiene ese huésped recado? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LUCÍA | |  |  | | --- | --- | | Juan a la mula le ha dado, |  | | y él está cenando agora. | 575 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MESONERA | |  |  | | --- | --- | | ¿Hiciste al padre Agustino |  | | la cama? |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LUCÍA | |  | | --- | | También. | | | | |
|  | | |
| *(Entren dos labradores, PASCUAL y LORENZO)* | |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | PASCUAL | |  |  | | --- | --- | | Entremos, |  | | que aquí, ¡voto al Sol!, podemos |  | | echar a quien paga el vino. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LORENZO | |  | | --- | | ¿Traéis los naipes? | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | PASCUAL | |  |  | | --- | --- | | Aquí | 580 | | los traigo, aunque no cabales. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LORENZO | |  |  | | --- | --- | | Sentaos en estos poyales. |  | | Lucía, ¿hay buen vino? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LUCÍA | |  |  | | --- | --- | | Sí, |  | | que en verdad que nos lo ha puesto |  | | a veinte el Alcalde hoy. | 585 | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | PASCUAL | |  | | --- | | ¿A qué echamos? | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LORENZO | |  |  | | --- | --- | | Al rentoy. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PASCUAL | |  |  | | --- | --- | | Con este envido mi resto. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LORENZO | |  | | --- | | ¿Es figura? | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PASCUAL | |  |  | | --- | --- | | ¿De qué sale? |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LORENZO | |  | | --- | | De bastos. | | | | |
|  | | |
| *(Entre un CORREO)* | |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORREO | |  |  | | --- | --- | | Muy tarde es ya, |  | | un poco nublado está; | 590 | | no hay alegría que iguale |  | | al caminar con el día. |  | | La noche es toda tristeza; |  | | hambre, cansancio y pereza |  | | me combaten a porfía. | 595 | | Yo paro en este mesón. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | PASCUAL | |  | | --- | | Rentoy. | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CORREO | |  |  | | --- | --- | | ¿Habrá qué cenar? |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LORENZO | |  | | --- | | Quiérole. | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LUCÍA | |  |  | | --- | --- | | No ha de faltar. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LORENZO | |  | | --- | | Tres más. | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PASCUAL | |  |  | | --- | --- | | Tres más; buenas son. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORREO | |  |  | | --- | --- | | Venga presto lo que hubiere, | 600 | | que he de pasar adelante. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LUCÍA | |  |  | | --- | --- | | Buen pan y vino bastante, |  | | y un palomino si quiere. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORREO | |  |  | | --- | --- | | Venga agora el pan y el vino, |  | | y sáquele, pesia a mí, | 605 | | que pienso que traigo aquí |  | | cierto hueso de tocino. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LUCÍA | |  |  | | --- | --- | | Llegue y siéntese a la mesa, |  | | que aquí hay pan. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CORREO | |  |  | | --- | --- | | Tráigame el vino. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | PASCUAL | |  | | --- | | Ocho piedras. | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LORENZO | |  |  | | --- | --- | | Imagino | 610 | | que pago. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PASCUAL | |  |  | | --- | --- | | A mí no me pesa. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LORENZO | |  | | --- | | Pues rindibuy. | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | PASCUAL | |  |  | | --- | --- | | Miraré. |  | | | | |
|  | | |
| *(Entre HAMETE)* | |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Fïado en la oscuridad |  | |  | | | | | |  | | | |  | | del cielo y de su piedad, |  |  |  |  | | en este lugar entré, | 615 |  |  |  | | que la hambre me ha forzado. |  |  |  |  | | Gente juega y cena aquí. |  |  |  |  | | ¡Ah, mancebo! |  |  |  |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | CORREO | |  |  | | --- | --- | | ¿Dice a mí? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¿Quiéreme dar un bocado |  | | de eso que cenando está? | 620 | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LUCÍA | |  |  | | --- | --- | | Ya el palomino se asa. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORREO | |  |  | | --- | --- | | ¿Dónde, gentil hombre, pasa? |  | | ¿Va a la Corte o dónde va? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | A la Corte voy. Y vós, |  | | ¿dónde vais? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORREO | |  |  | | --- | --- | | Allá también. | 625 | | Sentaos, que yo haré que os den |  | | alguna cosa. ¡Por Dios |  | | que parece al moro este hombre |  | | que a doña Leonor mató! |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | LUCÍA | |  | | --- | | ¿Este? | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Si soy o si no, | 630 | | agora sabrán mi nombre. |  | | | | |
|  | | |
|  | *(Dale)* | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | CORREO | |  | | --- | | ¡Ay, que me ha muerto! | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | LUCÍA | |  |  | | --- | --- | | ¡Oh, traidor, |  | | que el moro debes de ser! |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Ansí lo podrás saber. |  | | | | |
|  | | |
|  | *(Dala)* | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LUCÍA | |  |  | | --- | --- | | ¡Jesús! ¡Justicia, favor! | 635 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | PASCUAL | |  |  | | --- | --- | | ¡Oh, traidor! ¿Por qué das muerte |  | | a un hombre y una mujer? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Por poderos responder |  | | que lo hice desta suerte. |  | | *(Dalos)* |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | PASCUAL | |  | | --- | | ¡Justicia! | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LORENZO | |  |  | | --- | --- | | ¡Aquí de la villa! | 640 | | | | |
|  | | |
| *(Sale la MESONERA)* | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MESONERA | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué destruición es aquesta? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Pues si lo preguntas, esta, |  | | si acaso te maravilla. |  | | *(Dale)* |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MESONERA | |  | | --- | | ¡Muerta soy! ¡Confisión! | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¡Cielos, |  | | si os he servido en mi ley! | 645 | | ¡Libradme! |  | | | | |
| |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | | UNA VOZ | |  | | --- | | *(Desde dentro)* | | ¡Favor al Rey! |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | De mi fin me dan recelos. |  | | | | |
|  | | |
| *(El ALCALDE y labradores con chuzos y un MAESTRO DE ESGRIMA)* | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ALCALDE | |  |  | | --- | --- | | Llegad, nadie tenga miedo. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | Muchos vienen. | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ALCALDE | |  |  | | --- | --- | | ¡Ah, traidor! |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MAESTRO | |  |  | | --- | --- | | Llegad con tiento, señor, | 650 | | que es el moro de Toledo. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¡Que no tuviera una espada...! |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MAESTRO | |  | | --- | | ¡Date, perro! | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Muerto sí. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ALCALDE | |  |  | | --- | --- | | ¡Que este se defienda así...! |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | La fortuna viene airada. | 655 | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ALCALDE | |  |  | | --- | --- | | ¡... con un cuchillo no más! |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MAESTRO | |  |  | | --- | --- | | ¡Date o matarete, perro! |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ALCALDE | |  |  | | --- | --- | | ¡Mirad que matarle es yerro! |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MAESTRO | |  |  | | --- | --- | | Perro, ¿tan herido estás |  | | y te quieres defender? | 660 | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ALCALDE | |  | | --- | | Cayó. ¡Asilde! | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LABRADOR | |  |  | | --- | --- | | Aquí tenelde. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MAESTRO | |  |  | | --- | --- | | Pues, perro, ¿aquí estás rebelde? |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | ¡Matadme! | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | MAESTRO | |  |  | | --- | --- | | Pudiera ser |  | | si tu vida no importara. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | ALCALDE | |  | | --- | | Atalde muy bien. | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Mahoma, | 665 | | mi muerte a tu cargo toma, |  | | pues ya mi fin se declara. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ALCALDE | |  |  | | --- | --- | | Más sogas podéis traer. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MAESTRO | |  | | --- | | ¿Hay buena cadena? | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LABRADOR | |  |  | | --- | --- | | Brava. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MAESTRO | |  | | --- | | ¿Y esposas? | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ALCALDE | |  |  | | --- | --- | | Pensando estaba | 670 | | que fueran bien menester; |  | | pero sogas y cordeles |  | | harán oficio de esposas. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Matadme, heridas dichosas; |  | | será piedad ser crüeles. | 675 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | ALCALDE | |  |  | | --- | --- | | Vaya un aviso a Toledo. |  | | Ve tú, Pascual, si codicias |  | | ganar famosas albricias. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | LABRADOR | |  |  | | --- | --- | | Ya sabéis que al viento excedo. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | MAESTRO | |  | | --- | | ¿Hay cepo? | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ALCALDE | |  |  | | --- | --- | | Y puertas bien fuertes. | 680 | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | MAESTRO | |  |  | | --- | --- | | La guarda esté apercebida. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Perros, yo tengo una vida; |  | | no vengaréis tantas muertes. |  | | | | |
|  | | |
| *(Éntrense, y salga GASPAR SUÁREZ con luto)* | |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Alma de mi muerta vida, |  | |  | | | | | |  | | | |  | | mártir inocente, santa | 685 |  |  |  | | que pisa con pura planta |  |  |  |  | | el sol de su luz vestida. |  |  |  |  | | Como mi gloria, eres ida |  |  |  |  | | para gozar tanta gloria; |  |  |  |  | | tengo envidia a tu vitoria | 690 |  |  |  | | como a mí lástima el suelo |  |  |  |  | | de que te me diese el cielo |  |  |  |  | | para tan llorosa historia. |  |  |  |  | | Poco tiempo te gocé, |  |  |  |  | | poco tiempo me gozaste. | 695 |  |  |  | | Mas, en fin, tú me dejaste, |  |  |  |  | | que yo a ti no te dejé. |  |  |  |  | | Donde tu espíritu fue |  |  |  |  | | todo es gloria, prima mía, |  |  |  |  | | todo es luz y todo es día, | 700 |  |  |  | | mas en esta soledad |  |  |  |  | | todo es noche, escuridad, |  |  |  |  | | tristeza y melancolía, |  |  |  |  | | de suerte que yo he quedado |  |  |  |  | | en desventura tan cierta | 705 |  |  |  | | que, aunque tú has sido la muerta, |  |  |  |  | | he sido yo el agraviado. |  |  |  |  | | Si en este mísero estado, |  |  |  |  | | querida Leonor, reparas, |  |  |  |  | | tus heridas verás claras; | 710 |  |  |  | | mátanme memorias fieras. |  |  |  |  | | ¡Oh, qué piadosa que fueras |  |  |  |  | | si contigo me llevaras! |  |  |  |  | | Tal me tienes el deseo |  |  |  |  | | que forma con mi pasión | 715 |  |  |  | | mi fuerte imaginación |  |  |  |  | | la imagen con que te veo, |  |  |  |  | | y tan de veras lo creo |  |  |  |  | | que voy, señora, a abrazarte. |  |  |  |  | | No llego, Leonor, a parte | 720 |  |  |  | | que no te imagine allí, |  |  |  |  | | y apenas me acerco a ti |  |  |  |  | | cuando tu imagen se parte. |  |  |  |  | | ¿Adónde, mi vida, estás, |  |  |  |  | | pues te has llevado mi vida? | 725 |  |  |  | | Prima, prima mía querida, |  |  |  |  | | responde. Mas no querrás. |  |  |  |  | | Si de mis ojos te vas, |  |  |  |  | | ¿adónde hallarán mis ojos |  |  |  |  | | paz para tantos enojos? | 730 |  |  |  | | Leonor, ya es mi voz perdida, |  |  |  |  | | que en el cielo está su vida |  |  |  |  | | y en la tierra sus despojos. |  |  |  |  | | | | |
|  | | |
| *(Entra el HERMANO DE GASPAR)* | |  |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HERMANO | |  | | --- | | ¡Albricias, hermano! | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay, cielo! |  | | Albricias en tal dolor... | 735 | | ¿Ha parecido Leonor? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HERMANO | |  |  | | --- | --- | | No está Leonor en el suelo. |  | | Pero si hay algún consuelo |  | | en la muerte lastimosa |  | | de tu prima y de tu esposa | 740 | | es que ya el moro está preso. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué le importa a mi suceso |  | | ni al alma que en paz reposa? |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HERMANO | |  |  | | --- | --- | | Pues, ¿no importa la venganza? |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | GASPAR | |  | | --- | | No, hermano. | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HERMANO | |  | | --- | | ¿Qué dices? | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Digo | 745 | | que el ejemplo y el castigo |  | | importan a la templanza |  | | con que la justicia alcanza |  | | el respeto que se debe; |  | | este es bien que un hombre apruebe. | 750 | | Pero, ¿vivirá Leonor |  | | por ese fiero rigor? |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HERMANO | |  |  | | --- | --- | | Toda la ciudad se mueve |  | | al espectáculo fiero, |  | | porque el Alcalde Mayor | 755 | | le trae; el Corregidor |  | | sale a recebirle. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Espero |  | | en el juez verdadero |  | | muy diferente venganza. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HERMANO | |  |  | | --- | --- | | Siempre tuve confianza | 760 | | que le habían de prender. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | ¿Qué venganza ha de poner |  | | en tanto dolor templanza? |  | | | | |
|  | | |
|  | | |
| *(Vanse, y entra el CORREGIDOR y un SECRETARIO)* | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Ventura ha sido, más que diligencia. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SECRETARIO | |  |  | | --- | --- | | Muchos han dicho que, a no hallarse entonces | 765 | | el maestro de armas, que le dio en efeto |  | | las heridas que tiene, se escapara |  | | o que más gente que mató matara. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | ¿Que a tantos diese muerte? Estraño caso. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SECRETARIO | |  |  | | --- | --- | | Desconfïado de poder librarse, | 770 | | cuantos le conociesen mataría. |  | | Siete muertos se prueban y once heridos. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Si él lo está mucho, temo que se muera, |  | | cosa de que en estremo me pesara. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SECRETARIO | |  |  | | --- | --- | | Dale alguna esperanza de la vida | 775 | | cuando le veas, que este pensamiento |  | | podrá ser que algún día la dilate. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Ni pienso hacerle cargo ni que tomen |  | | su confesión. Las de las dos crïadas |  | | y aquesta información que han hecho en juncos | 780 | | basta para el castigo que pretendo |  | | hacer, tan ejemplar que a los esclavos |  | | y a los que no lo son quede escarmiento. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | SECRETARIO | |  | | --- | | Ya llega el moro. | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Sus heridas siento. |  | | | | |
|  | | |
| *(Con cadenas y esposas y guarda de arcabuces delante, saquen a HAMETE el ALCALDE MAYOR, y el ALCALDE LOCAL, y el DE TOLEDO)* | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ALCALDE M. | |  |  | | --- | --- | | Ya puede estar vuesa merced contento. | 785 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Agora sí, supuesto que fue dicha |  | | más que cuidado y diligencia nuestra, |  | | aunque se ha hecho lo que fue posible. |  | | ¿Qué hay, Hamete? ¿No hablas? |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | ALCALDE L. | |  |  | | --- | --- | | Viene enfermo. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Pues por vida del Rey, perro bellaco, | 790 | | que, si vivís, que yo os eche a galeras, |  | | y que habéis de remar más de seis años. |  | | ¡A vuestra ama, traidor, y a las crïadas, |  | | al molinero pobre y al correo, |  | | sin otros mil en los caminos! |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | ¡Cielos! | 795 | | ¡Galeras dice! ¡Corazón turbado, |  | | no te desmayes! ¡Ánimo! Vivamos, |  | | pues este, con estar con tanto enojo, |  | |  | | | | | | —fol. 77r→ | | | |  | | con ellas me amenaza por castigo. |  |  |  |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Ea, llévenle luego a ese bellaco, | 800 | | que antes de un mes sabrá qué son galeras. |  | | *(Llévanle)* |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | SECRETARIO | |  | | --- | | ¿Dices las del infierno? | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Por las mismas. |  | | Oíd lo que se ha de hacer de aqueste moro: |  | | primeramente, atado en un madero, |  | | que vaya puesto en la mitad del carro, | 805 | | le han de sacar pedazos de sus carnes |  | | con tenazas ardiendo en todo el cuerpo |  | | hasta que no descubra cosa sana; |  | | luego, en Zocodover, entrambas manos |  | | le han de cortar, y luego, de la horca | 810 | | que ya he mandado hacer, han de colgarle |  | | por los pies, la cabeza abajo, a efeto |  | | de que muera rabiando deste modo. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | SECRETARIO | |  |  | | --- | --- | | Grande castigo, pero poco es todo. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Escribid desta suerte la sentencia, | 815 | | que no hay tiempo de hacer más diligencia |  | | ni hay que aguardar con un villano moro |  | | que mañana ha de estar en el infierno. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | SECRETARIO | |  |  | | --- | --- | | Con todo eso, cuando salga es justo |  | | que algún fraile le hable; ser podría | 820 | | que le tocase Dios. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | TELLO | |  |  | | --- | --- | | Dios puede hacerlo. |  | | Aunque él es tal que al cielo desobliga, |  | | más bien será llamar quien se lo diga. |  | | | | |
|  | | |
| *(Váyase, y entren tres villanos y JUANA, INÉS y BENITA con sombreros y mantellinas)* | |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | JUANA | |  |  | | --- | --- | | No le dejaré de ver, |  | | ¡por el siglo de mi padre! | 825 | | Mató a mi hermana y mi madre. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Ofrézcole a Lucifer, |  | | que tal me puso a mi tía. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BENITA | |  |  | | --- | --- | | Luego le quieren sacar, |  | | que temen no ha de llegar | 830 | | si le aguardan a otro día. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | JUANA | |  |  | | --- | --- | | Como no hay que prevenir |  | | ni aguardar a confisión, |  | | y temerán con razón |  | | que se les puede morir. | 835 | | Yo apostaré que no está |  | | en la cárcel seis horas. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Las calles cubren, señoras; |  | | todo el mundo a verle va. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BENITA | |  |  | | --- | --- | | Pienso que si acaso un mes | 840 | | su muerte se detuviera, |  | | que de Sevilla viniera |  | | gente para velle, Inés. |  | | ¿Murió ya el pobre Correo? |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | JUANA | |  |  | | --- | --- | | Tres horas solas vivió. | 845 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | El perro no ejecutó |  | | como quiso su deseo, |  | |  | | | | | | —fol. 77v→ | | | |  | | que si una espada tuviera, |  |  |  |  | | como un cuchillo tenía, |  |  |  |  | | no es de creer que aquel día | 850 |  |  |  | | hombre de juncos viviera. |  |  |  |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BENITA | |  |  | | --- | --- | | Dicen que en un olivar |  | | mató también un pastor. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Quien mató a doña Leonor, |  | | ¿qué dejara de matar? | 855 | | Tarjeta dice que ha sido |  | | el cura. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | JUANA | |  | | --- | | ¿Tarjeta? | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Sí. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | JUANA | |  |  | | --- | --- | | ‘Tragenia’ pienso que oí, |  | | por las muertes que ha tenido. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | ‘Tarjeta’ o ‘targenia’. En fin, | 860 | | pagará el perro este día |  | | el haber muerto a Lucía |  | | y a Juana de San Martín. |  | | Voto a mi sayuelo, amén, |  | | que no me veré vengada | 865 | | si a cualquiera tenazada, |  | | como torrezno en sartén, |  | | no chilla y salta el bellaco. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | JUANA | |  | | --- | | ¿Dejáranle tirar? | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BENITA | |  |  | | --- | --- | | No. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | JUANA | |  |  | | --- | --- | | Pues, si no le tiro yo, | 870 | | poco la cólera aplaco. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | La cabeza han de poner |  | | y allí la podréis tirar, |  | | pues que se la ha de llevar |  | | de aquí a un hora Lucifer. | 875 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BENITA | |  |  | | --- | --- | | Echa por aquesta calle, |  | | que siento grande roído. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Si él se muere, habrán querido |  | | despachar presto y matalle. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | JUANA | |  |  | | --- | --- | | Todo el mundo se alborota. | 880 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | INÉS | |  |  | | --- | --- | | Si esta noche se le entregan, |  | | ¿cuánto va que con él juegan |  | | los diablos a la pelota? |  | | | | |
|  | | |
| *(CORCUERA y BELTRÁN con un paño en la cabeza)* | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Salir a verle quise, aunque me muera. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Es cosa que a Toledo ha dado espanto, | 885 | | como si el mismo fin del mundo fuera. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Aún no me podré ver vengado tanto. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | En un carro salió que, a no ser moro, |  | | bañara la ciudad en tierno llanto; |  | | mas, como falta el celestial decoro | 890 | | de la cristiana crisma, aquello siente |  | | que cuando ve en la plaza herido un toro. |  | | Vienen delante en un brasero ardiente |  | | las tenazas que sacan a bocados |  | | desde los pies la carne hasta la frente; | 895 | | pero el valiente moro los airados |  | | ojos vuelve no más a quien le quema |  | | sin resistir los miembros abrasados. |  | | Predícanle, mas el ciego en su tema |  | | solo a Mahoma entre los dientes nombra | 900 | | y alguna vez de nuestra fe blasfema. |  | | La mano le pidió, cosa que asombra, |  | | el verdugo, y la puso en un madero |  | | como si la pusiera en una alfombra; |  | |  | | | | | | —fol. 78r→ | | | |  | | cortó los huesos el cuchillo fiero | 905 |  |  |  | | y, antes que la siniestra le pidiesen, |  |  |  |  | | ya estaba puesto al riguroso acero. |  |  |  |  | | Mas no que por aquesto le moviesen |  |  |  |  | | a quejarse, a dolerse de sí mismo; |  |  |  |  | | ni una palabra de su boca oyesen. | 910 |  |  |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | ¡Ay, si pidieras bárbaro el bautismo, |  | | tan cerca estabas de gozar del cielo |  | | como lo estás del temeroso abismo! |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | CORCUERA | |  |  | | --- | --- | | Volved los ojos, que me cubre un hielo |  | | de solo verle en tantas desventuras. | 915 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | BELTRÁN | |  |  | | --- | --- | | Aunque este es moro, la piedad recelo |  | | que bastará a mover las piedras duras. |  | | | | |
|  | | |
| *(Descúbranse aquellas puertas y véase dentro un teatro, y en el medio HAMETE atado a un palo, atenaceado; un brasero delante con las tenazas, dos frailes a los lados, el verdugo y alguna gente abajo)* | |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FRAILE | |  |  | | --- | --- | | Hamete, vuélvete a Dios, |  | | que aún tienes agora tiempo. |  | | Mírale en aquesta cruz | 920 | | por nuestros pecados muerto. |  | | Mírale abiertos los brazos |  | | para que solo diciendo |  | | «Pequé, señor» se desclave |  | | para abrazarte con ellos. | 925 | | Cuando Dios murió en cuanto hombre, |  | | estaba a su lado diestro |  | | un ladrón que acompañaba |  | | al inocente Cordero, |  | | y porque dijo: «Señor, | 930 | | creyendo ser Dios eterno, |  | | acuérdate de mí cuando |  | | estuvieres en tu Reino», |  | | le dijo: «Hoy serás comigo |  | | en los descansos del cielo», | 935 | | y le cumplió la palabra. |  | | Haz tú lo mismo, te ruego. |  | | Di: «Señor, yo creo en Vós», |  | | que, con solo decir ‘creo’, |  | | te bautizaré y irás | 940 | | con este Señor inmenso. |  | | ¿No quieres? ¿No me respondes? |  | | ¡Virgen santa cuyos pechos |  | | crïaron este Señor |  | | que Madre y Virgen nos dieron! | 945 | | Rogad por él, Ángel santo |  | | de la Guarda; Apóstol Pedro, |  | | rogad a Dios que le mire; |  | | Ladrón santo, llegad presto. |  | | Y en señal de la ganzúa | 950 | | con que robastes el cielo, |  | | Bautista, pues que los moros |  | | os llaman ‘profeta nuestro’ |  | | y hacen fiestas vuestro día, |  | | dad a este moro remedio. | 955 | | ¿No respondes? |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Sí, mi padre. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | FRAILE | |  | | --- | | ¿Y qué dices? | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Que en Dios creo, |  | | y que Bautista me llamo. |  | | Llámenme a mi amo presto. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FRAILE | |  |  | | --- | --- | | Si lo haces porque piensas | 960 | | que has de vivir, hoy te advierto |  | | que, aunque te vuelvas cristiano, |  | | te han de dar dos mil tormentos. |  | | No lo hagas por la vida |  | |  | | | | | | —fol. 78v→ | | | |  | | temporal, porque respeto | 965 |  |  |  | | de la eterna es punto, es nada. |  |  |  |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Yo no lo digo por eso: |  | | bien sé que no he de vivir |  | | sin manos y roto el cuerpo. |  | | Por gozar de Dios lo digo, | 970 | | y porque en los aires veo |  | | dos mil cruces de San Juan |  | | donde un pronóstico entiendo |  | | en que vi cadenas, horca, |  | | cruces, mar, cuchillo y fuego, | 975 | | que todo está aquí cumplido. |  | | Solo el mar falta: ese espero; |  | | porque el agua del bautismo |  | | es mar de gracia en que puedo, |  | | con aquesta contrición, | 980 | | salvarme y llegar al puerto. |  | | | | |
|  | | |
| *(Sale GASPAR SUÁREZ)* | |  |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | FRAILE | |  |  | | --- | --- | | Ya tu señor está aquí. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HAMETE | |  | | --- | | Señor mío... | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | GASPAR | |  | | --- | | Hamete... | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Pienso |  | | que ninguna cosa puede, |  | | con ser tantos mis tormentos, | 985 | | templar tu enojo y rigor |  | | como ver este buen celo |  | | con que me vuelvo cristiano. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Bien dices. Por Dios te ruego |  | | que tu salvación procures. | 990 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Perdóname el haber muerto |  | | aquel ángel de tu esposa. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Bautízate, Hamete, y presto |  | | la verás con otra vida. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Pues, dadme el bautismo, y luego | 995 | | iré a ver a mi señora. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Por tu padrino me ofrezco. |  | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Padre, di que me perdonen. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FRAILE | |  |  | | --- | --- | | Ya todos lo están diciendo. |  | | Mientras el agua le doy, | 1000 | | cubridle con ese velo. |  | | | | |
|  | | |
| *(Pongan un velo delante)* | |  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Si alguna cosa podía |  | | templar mi gran sentimiento |  | | es ver a Hamete cristiano. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HERMANO | |  |  | | --- | --- | | ¡Cuán digna de vuestro pecho | 1005 | | es esa piedad cristiana! |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Mártir hermoso, ángel bello, |  | | tus oraciones son estas; |  | | sin duda que por tus ruegos |  | | hizo Dios merced a este hombre | 1010 | | de que te viese en el cielo. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | HERMANO | |  | | --- | | El velo quitan. | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | FRAILE | |  |  | | --- | --- | | Ya tienes |  | | el bautismo, Hamete. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | El Credo |  | | me ve diciendo, señor. |  | | | | |
| |  |  |  | | --- | --- | --- | | FRAILE | |  | | --- | | Gran fe. | | | | |
| |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Que se muere entiendo. | 1015 | | | | |
| |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | HAMETE | |  |  | | --- | --- | | Jesús, María, Bautista: |  | | a todos tres me encomiendo. |  | | | | |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | GASPAR | |  |  | | --- | --- | | Murió porque quiso Dios |  | | que fuese a gozarle presto. |  | | Noten los que esclavos tienen | 1020 | | desta tragedia el ejemplo, |  | | que con esto se da fin |  | | al Hamete de Toledo. |  | | | | |